ओ३म्

वैदिक धर्म प्रचार के साधन

अर्थात्

श्री ला० हंसराज जी प्रिंसीपल
डी. ए. वी. कालिज, लाहौर के

चार लैक्चर

जिसको

पुस्तकाध्यक्ष आर्य्य समाज अनारकली
लाहौर ने प्रकाशित किया ।

बाम्बे मैशीन प्रेस लाहौर में ला० दुनीचन्द मैनेजर के
अधिकार से छपा ॥

संवत १९६९ दयानन्दाब्द २९

मूल्य =)

१००० प्रति

॥ ओ३म् ॥

निवेदन

प्रिय पाठकगण! यह लैक्चर पहिले पहिल ला॰ खुशहालचंदजी खुरसन्दने आर्य्य गज़ट में छापे थे। फिर श्री पं॰ संतरामजी संपादक आर्य्यप्रभा की प्रेरणा से मैंने इनको हिन्दी में अनुवाद करके आर्य्य प्रभा में प्रकाशित किया था। इसके कुछ समय बाद बक्षी रामरत्नजी बी.ए. बी.टी. हैडमास्टर डी.ए.वी. हाई स्कूल लाहौर की प्रेरणा से डी.ए.वी. स्कूल की यंगमैन समाजने इन लैक्चरों को उर्दू अक्षरों में पुस्तकाकार छापा। तब से मेरी यह तीव्र इच्छा थी कि हिन्दी भाषा में इनको पुस्तकाकार छापा जावे। कई बार श्री पुस्तकाध्यक्षजी आर्य्य समाज अनारकली से प्रार्थना कीगई और अन्त में वह प्रार्थना स्वीकृत हुई और अब यह लैक्चर हिन्दी भाषा में पाठकों के अर्पण किये जाते हैं। मैं समझता हूं कि इसमें हिन्दी व्याकरण की भूलें होंगी। परन्तु इस कहावत के अनुसार "कि गिर२ कर सवार होते हैं" मैंने उचित समझा कि आपके सन्मुख यह अवश्य रक्खे जावें। पाठकगण यह स्मरण रखेंगे कि यह लैक्चर हैं, निबन्ध या लेख नहीं जिनको पुस्तकाकार किया गया है। लैक्चरार (व्याख्यान दाता) निबन्ध या लेख वाली शैली को अथवा लालित्य को स्थिर नहीं रख सकता, उसने जो कह दिया सो कह दिया, ग्रन्थकर्ता की तरह उसे अपने कथन को बदलने या न्यूनाधिक करने के लिये कोई समय नहीं होता, फिर भी आशा है कि यह अधिक लाभदायक तथा रुचिकर होंगे॥

आपका शुभचिन्तक,

टोडरसिंह वर्म्मा

कार्क आर्य्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, लाहौर॥

धर्म प्रचार के साधन

ला० हंसराज जी का पहिला लैक्चर

(बुद्ध धर्म कैसे फैला)

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में मन्तव्य अमन्तव्य का विषय लिखा है उसको लिखकर आप अपनी इच्छा प्रगट करते हैं कि परमात्मा करे यह सत्य धर्म जिसे वैदिक धर्म कहते हैं ब्रह्माण्ड के कोने २ में फैले। और सारे लोग इसको ग्रहण करें ताकि वह सच्चे आनन्द की उपलब्धी कर सकें। यह वाक्य सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में लिखा हुआ है। आर्य धर्म उन धर्मों में नहीं होसकता कि जिन के मैम्बर यह समझ लें कि सन्ध्या करने के बाद हमारे कर्तव्य समाप्त होजाते हैं, अथवा हवन करने और ऐसा ही अपना कोई और उन्नति का काम करने के बाद इनकी ज़िम्मावारी समाप्त होजाती है। आर्य समाज के प्रवर्तक ने हरएक मैम्बर पर यह :—

कर्तव्य

लगा दिया है कि उसे केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये। जहां तक वह वैदिक धर्म को अपने लेख द्वारा या मुख द्वारा पहुंचा सकता है दूसरों तक पहुंचावे, इसलिये यह धर्म ऐसा नहीं, जिसे हम सीने में दबा कर चले जावें॥

प्रत्युत इसके हमें यह आज्ञा दी गई है कि हम इसको प्रकट करें और जो इसको नहीं जानते उनको वतलाया जावे। हमारा

परम कर्तव्य यह बतलाया गया है कि जिस प्रकाश से हमको प्रकाश मिला है उससे दूसरों को ज्योति मय बनावें। परन्तु ज्योति फैलाने की कौन सी विधियें हैं। इसके लिये आवश्यक है कि हम :—

जगत का इतिहास

पढ़ें जगत का इतिहास, जगत का पुराना अनुभव है उस में धार्मिक इतिहास है उस पर हम को दृष्टी डालनी चाहिये। जिन कठिनाइयों और आपदाओं ने दूसरों के रास्ते में बाधा डाली और जो रुकावटें उनके धर्म प्रचार में बाधा डालती रहीं, उनको हमें देखना है उनके दूर करने के उपाय और आगे बढ़ने के तरीके मालूम करने हैं। किस तरह हम इन्हीं कष्टों को दूर करके अपना रास्ता निकाल सकते हैं और कैसे उसी रास्ते पर चलते हुए सफलता के स्थान पर पहुंच सकते हैं इसको दो और व्याख्यानों में समाप्त करूंगा। आज सब से पहिले :—

बुद्ध मत

का वर्णन करूंगा। यह सब से प्रथम मत है जिसने वैदिक धर्म के अनन्तर उन्नति प्राप्त की, जो न केवल भारतवर्ष में प्रत्युत इससे भी बाहिर और बहुत से देशों में फैला। यह मानी हुई बात है और बहुत से चिन्ह मिलते हैं जिनसे प्रगट होता है कि वैदिक धर्म ने सारे संसार पर अपना अधिकार जमाया हुआ था। मुझे इसके विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं क्योंकि यह प्रसिद्ध है और इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि वैदिक धर्म भारतवर्ष में बड़ा ही प्रबल रहा। परन्तु जैसाकि हरएक धर्म के साथ होता

है एक ऐसा समय आया कि इसके अनुयायियों ने इसके नियमों को भ्रम मूलक कर दिया। समय में बहुधा परिवर्तन हो ही जाता है। वास्तव में वैदिक धर्म में कोई भूल न थी। परन्तु इसके मानने वालों के आचार और व्यवहार में भूलें उत्पन्न हो गईं। फिर यह आवश्यक था कि कोई इन भूलों को शोधने वाला उत्पन्न हो। यदि आप शास्त्रों को देखें तो एक बात जो सब से पहले आपको प्रतीत होगी वह यह है कि ऋषियों ने इन में :—

यज्ञ की महिमा

को बड़े विस्तार से लिखा है मेरे विचार में उन्हों ने वेद मन्त्रों को लेकर उनके सूक्ष्म अर्थों को विचार करने के अनन्तर देखा कि इनमें कौनसी विद्या है फिर जो इनकी दृष्टि गोचर हुआ उसको यज्ञों में रख कर लोगों का जीवन पवित्र बनाने के लिये इनको दे दिया। आजकल सभ्य संसार में :—

एक प्रबल प्रश्न

उत्पन्न हो रहा है और वह इसका उत्तर ढूंढ़ने में असमर्थ है। संसार में जितने बड़े लोग हैं वह विचार कर रहे हैं कि ज्यों २ सभ्यता बढ़ती जाती है लोग दुर्बल होते जाते हैं। इस में कोई सन्देह नहीं कि जितने साधन एक असभ्य या जङ्गली आदमी को नष्ट करने के लिये एक सभ्य आदमी के हाथ में हैं और किसी के पास नहीं। यदि थोड़े समय के लिये इन हथियारों और साधनों को छोड़ दें तो इसका यह फल होगा कि वह इनके बिना कुछ नहीं कर सकता। अब वह एक असभ्य से अधिक दुर्बल हो जाता है और उससे अधिक अनर्थक (निकम्मा) प्रतीत

होता है। यह स्मरण रहना चाहिये कि जिन लोगों के घरों में अमीरी आजाती है, ऐश्वर्य बढ़ जाता है वह स्वयं ही आलसी होजाते हैं। आप ज़रा दो आदमियों की परीक्षा करें कि एक के पास नौकर नहीं वह स्वयं नहाता, रोटी पकाता, वर्तन साफ़ करता और दूसरे काम भी करता है इसलिये वह बलवान् है। परन्तु दूसरे के पास नौकर है, वह रोटी पकवाने, नहाने, कपड़े पहिनने और बूट पहिनने के कामों में भी उसके आधीन है। उसके घर की स्त्रियें नौकर के बिना पानी नहीं पी सकतीं। ऐसे लोगों का नाम शीघ्र ही संसार से अदृश्य होजाता है। इस से प्रतीत होता है कि सभ्य आदमी अधिक निर्बल होता चला जा रहा है। ऐश्वर्य्य का सीमा से अधिक होजाना आलस के लाने का कारण है। और आलस का आना ऐश्वर्य्य के नष्ट होने और उसके विनाश होजाने का कारण है। विचार शील :—

अमरीका के प्रधान

के हृदय में भी यही प्रश्न उठा है और एक अधिवेशन में उस ने इसे प्रगट किया है कि इस सभ्य संसार को इस बात का ख्याल करना चाहिये कि वह दिनों दिन निर्बल होता जाता है। इस भय से बचने के लिये कोई उपाय सोचना चाहिये॥

जो प्रश्न एक मनुष्य के लिये उत्पन्न होता है वही एक घराने के विषय में, जाति के विषय में और देश के विषय में उत्पन्न होता है। कसस हिन्द (एक उर्दू पुस्तक) में इसके विषय में अति उत्तम शब्दों में :—

दो दृष्टान्त

आते हैं। जिस समय नादरशाह भारत वर्ष में आया और

करनाल पहुंचा, तो दिल्ली का सम्राट (बादशाह) मुहम्मदशाह भी वहां आया। ग्रीष्म ऋतु का समय था, दोनों एक कमरे में बैठे थे, पंखा होरहा था, उस समय मुहम्मदशाह ने तो इकतारी मलमल का कुरता पहिना हुआ था और नादरशाह ने मोटी पोस्तीन पहनी हुई थी। परन्तु इससे नादरशाह को बिलकुल गर्मी न लगती थी और मुहम्मद शाह गर्मी के कारण अचेत हो रहा था, ऐसे समय में मुहम्मदशाह ने पूछा, कि यह क्या बात है कि मैंने मलमल का कुरता पहना हुआ है और गर्मी के मारे अचेत हुआ जाता हूं और आप पोस्तीन पहने हुए भी गर्मी का नाम ही नहीं लेते। नादरशाह बोला—निःसन्देह यही बात है और यही पोस्तीन है जो मुझे तहरान से लाई है और जिस ने मुझे आज करनाल दिखाया है॥

और तुम्हें इस मलमल ने देहली से भी आगे न बढ़ने दिया। (नादरशाह ने क्या ही ठीक कहा है) इसके अनन्तर मुहम्मद-शाह की इकतारी मलमल वाली सन्तान शीघ्र नष्ट होगई परन्तु नादरशाह पोस्तीन वाले की सन्तान अधिक प्रबल और बलवान होती गई॥

जिस समय ऐश्वर्य्य बढ़ जाता है तो थोड़े समय के अनन्तर वह घटने लगता है और जब तक वह साधन न बर्ते जावें जिससे उसका घटना बन्द हो तब तक ऐश्वर्य्य स्थिर नहीं रह सकता। ऋषियों ने सचाइयों को अनुभव कर लिया था॥

सहस्रों वर्ष पहिले

उन्हों ने बड़ी सुन्दरता से उस समय में इस प्रश्न का उत्तर

भी ढूंढ़ लिया था, ऋषियों ने इस प्रश्न को आर्यों के जीवन में डाला, और जीवन को ऐसे साधनों से पुरो दिया जिनसे ऐश्वर्य कम न हो। उन्हों ने द्विजों के लिये यज्ञोपवीत संस्कार आवश्यक समझा। हर एक द्विज के लिये उन्हों ने यह नियम. बांधा और वेदों से इस नियम को उद्धृत करके उन्हों ने जीवन में घटाया। और यज्ञोपवीत देते समय जो उपदेश दिया जाता है उस में बतलाया गया है कि विद्यार्थी सादा जीवन व्यतीत करे। विद्या प्राप्त करे, आज्ञाकारी होना सीखे, (मैं विद्या और आज्ञापालन के विषय में कुछ नहीं कहता) जीवन के तरीके देखे, जिस समय यह संस्कार होता है लड़के को आज्ञा दी जाती है, तुम गाड़ी, घोड़े पर न चढ़ना. जूता न पहिनना, बैठने के लिये मृग छाला पहिनने के लिये मामूली धोती और लङ्गोटी। हाथ में दण्डा, बिस्तरा कड़ा रखना इनमें एक २ वस्तु ही लाभकारी है और यदि इन सब का मेल होजाये तो मनुष्य को कुछ का कुछ बना सकती हैं। विद्यार्थी का काम होता था कि वह गुरु को स्नान कराये, लकड़ियां हवन के लिये एकत्र करे। इन लड़कों में से चाहे कोई लड़का ऐश्वर्य वाले का होता या राजा महाराजा का होता अथवा निर्धन से निर्धन और कङ्गाल का होता सब को उपरोक्त जीवन व्यतीत करना पड़ता था यह वह कार्य्य था जो ऐश्वर्य को घटने न देता था, जिस आराम और सुख में इन्हों ने आगे जाकर पड़ना था उसमें इस प्रकार के जीवन वाले मनुष्य गिर नहीं सकते थे। ऐश्वर्य के कुव्यवहार से जो बुराइयां उत्पन्न होती हैं उनके लिये ऋषियों ने इन संस्कारों को बांधा था और हमारे ऋषियों ने इस प्रश्न का सहस्रों वर्ष पहिले उत्तर पा लिया था, जिसका उत्तर आज यूरोप ढूंढ़ रहा है॥

यज्ञों में कई इस प्रकार के यज्ञ हैं कि उनके सूक्ष्मतत्व हम समझ नहीं सकते। परन्तु हमारे लिये अत्यन्त लाभकारी हैं। एक पुत्रेष्ठि संस्कार है अर्थात् जिसको पुत्रकी इच्छा हो वह यह संस्कार करे। इसमें बड़ी भारी साइन्टीफिक (विज्ञानसम्बन्धी) बातें भरी हुई हैं इसी प्रकार वृष्टि यज्ञ है जब कभी ऋषियों को वृष्टि की अवश्यकता होती थी तो वह इस यज्ञ को करते थे। आज लोग इसको मानने पर तैयार नहीं, परन्तु कल यदि यूरोप ने कोई ऐसी प्रणाली (तरीक़ा) निकाल दी तो यह झट मान जावेंगे। और यह हृदय की संकीर्णता का ही कारण है॥ ऋषियों ने वेदों को पढ़कर उनसे विद्या निकाल कर उसे यज्ञों के रूप में रख दिया। यज्ञ क्या थे? एक प्रकार की विद्या थी। इस प्रकार जब यज्ञ हम में विद्यमान थे हमारा जीवन उनसे होता था। परन्तु बात चाहे कैसी ही अच्छी क्यों न हो, समय आता है जब कि वह अच्छी बातें भी बुरी प्रतीत होने लगती हैं। इसके साथ एक और बात भी देखने योग्य है आप आर्यों के दर्शन शास्त्रों और उपनिषदों को देखें उसमें ब्रह्म विद्या का किस उत्तमता से वर्णन कियागया है। यह विद्या ऐसी है कि अभी तक दूसरे यहां तक नहीं पहुंचे। इसको पढ़कर वह चकित होते हैं कि किस प्रकार ऐसे कठिन प्रश्नों का उत्तर ढूंढा गया है। यह धर्म के दोनों अंग हैं। पहिला यज्ञ विद्या और दूसरा ब्रह्म विद्या। परन्तु समय ही तो है! जिसने उनके साथ बुरा वर्त्ताव किया। उनमें परिवर्तन होगया। लोगों की समझ पर पत्थर पड़ गये। वह उस यज्ञ को सम्पूर्ण ही नहीं समझते थे जिस में :—

सहस्रों पशु काटकर

न डाले जावें, और यज्ञ सम्पूर्ण नहीं जाने जाते थे जब तक उनमें भांति २ की मदरायें (शराबें) न पीयी जावें। और यजमान की स्त्री के साथ मखौल न किया जावे। जब लोगों के अन्दर इस दुराचार ने स्थान पाया, यज्ञों में मांस, शराब और हंसी ठट्ठा आरम्भ होगया, जब यह परिपाटी (सिलसिला) बन्धी तो गिरावट होने लगी। और कई वर्षों तक यही अवस्था रही। छोटी २ बातों में झगड़ा और वितण्डा होता था और कात्यायन सूत्र में एक झगड़ा आता है कि हवन कुण्ड के आस पास जो गोबर का लेप दिया जाता है और उस से जो गोबर शेष बच रहता है उसका क्या करना चाहिये। उस पर बहुत काल तक वादविवाद होते रहे। वस्तुतः जो यज्ञ विद्या के साधन थे वह रसूमात बनगये, जो जीवन उनमें था वह दूर होगया। और बुराई ने डेरा जमा लिया। उस समय यह आवश्यक था कि कोई उस को ठीक करता और उस समय सब से पहिला धर्म जो वैदिक धर्म के मुकाबले में खड़ा हुआ वहः—

बुद्ध धर्म

था, परन्तु वह वास्तविक वैदिक धर्म के व्याघात (मुकाबले) में खड़ा नहीं हुआ, प्रत्युत बिगड़े हुए वैदिक धर्म के व्याघात पर आया॥

बुद्ध के विषय में आपने सुना होगा कि उसे किस प्रकार वैराग हुआ॥

शहर के फाटकों की घटनायें कैसी हृदय विदारक हैं। जब

वह एक फ़ाटक से निकला तो आगे से एक बीमार आ रहा था बुद्ध ने रथवान से पूछा कि इसे क्या है ? रथवान ने कहा महाराज इसे ज्वर है और उस से दुःखित हो रहा है। फिर बुद्ध ने पूछा क्या बीमारी हरएक को घेरती है। रथवान ने कहा—हां कभी २ ॥

बुद्ध—क्या इस से मैं भी नहीं बच सकता। रथवान—कदाचित नहीं।

दूसरे दिन दूसरे फाटक से बाहिर जाते हुए एक शव (मुरदे) को देखा और फिर रथवान से पूछा यह क्या है ?

रथवान ने कहा महाराज ! इस की मृत्यु होगई है।

बुद्ध—क्या हर एक को मृत्यु घेरता है। रथवान—निःसन्देह।

बुद्ध—तो क्या मैं भी इस के जाल में फंसूंगा, रथवान—अवश्य ही।

बुद्ध ने एक ठण्डी सांस ली और चले आये। फिर एक दिन फाटक पर एक बृद्ध मनुष्य को देखा, उसके अङ्ग अङ्ग में दुर्बलता छागई थी, झुरियां चेहरे (मुंह) पर पड़ी थीं आखें बीच में धंसी हुई थीं। टांगें लड़खड़ाती थीं उसको देख बुद्ध ने फिर वही प्रश्न किये। इन घटनाओं को देखकर बुद्ध ने विचार किया कि मृत्यु से कैसे बच सकते हैं ? हम विषयों को कैसे छोड़ सकते हैं ? (हम विषयों में लम्पट हुए २ क्षण भंगर सुख भोग रहे होते हैं कि मृत्यु आती है और नष्ट बिनष्ट कर देती है. इसलिये यह आवश्यक है कि ऐसे जीवन को ही त्याग दिया जाये) बुद्ध महाराज की स्त्री के लड़का इन्हीं दिनों उत्पन्न हुआ था, वह अभी ग्यारह ही दिन का था कि बुद्ध ने घर बार छोड़ देने का विचार किया। और अन्तिम रात को जब वह चलने लगा तो

उसके मन में यह इच्छा हुई कि बच्चे को एक वार देख तो चलूं। वह आधी रात के समय प्रसव-गृह में आया वह कञ्चनियां जो इस के मन बहलाव के लिये रक्खी गई थीं बेसुध पड़ी थीं। बच्चा उसकी स्त्री की छाती पर सो रहा था चित्त में आया कि बच्चे को चूम लूँ,परन्तु फिर सोचा कि यदि स्त्री जाग उठेगी और मेरे इस समय इस प्रकार से आने का कारण पूछेगी, तो फिर मेरा जाना कठिन होजायगा,वह बच्चे को विना चूमे ही निकल गया। नदी पर जाकर सोने के आभूषण उतार कर नौकर को देदिये, बुद्ध वहां से बनारस आये, वहां विद्या ग्रहण की, फिर तपस्या की, परन्तु इस से चित्त शान्त न हुआ फिर एक बार कठिन तपस्या की, और इतनी की, कि जीवन की आस न रही, उस समय इनका आत्मा प्रकाशित हुआ और मन में यह भाव उत्पन्न हुआ, कि इस रीति से आत्मघात करने से और नष्ट हो जाने से कुछ नहीं बनता। केवल मात्र यही आवश्यक था कि इन्द्रियों के भोगों को तज कर ऊपर और ऊंचे चले जावें। और इस हवा से ऊपर चढ़ जावें ताकि वह इन सारे दृश्यों को देखें, परन्तु इन में लिप्त न हों॥

समुद्र में जहाज़ चल रहा है वह एक पहाड़ी से टकराता है लहरें उसको तोड़ती हैं सवार का हृदय विछिन्न होजाता है और वह कांपने लगता है, परन्तु समुद्र के किनारे की पहाड़ी पर बैठा हुआ मनुष्य घबराता नहीं, लहरें आकर टकराती हैं परन्तु निरास होकर पीछे लौट जाती हैं। इसी प्रकार जीवन ऐसा उच्च हो कि सांसारिक दुःख क्लेश और अन्य आपदायें हम को न सता सकें। और उनका प्रभाव तक न पड़े। इस प्रश्न को उसने हल (व्याख्या) किया, और—

अष्टांग

प्रणाली (तरीक़ा) मालूम की, और एक जैसे नियम बनाये, सत्यभाषण शुद्धाचरण और अन्य कई एक। इस प्रकार से उसने निरवाण होने का मार्ग बतलाया। बुद्ध मत के नियम कुछ नवीन नहीं थे, यह सब वैदिक धर्म में वर्तमान था, परन्तु उस समय यह दशा नहीं थी, वैदिक धर्म बिगड़ चुका था, इस लिये उसने इसकी विरोधता की, परन्तु उसने अमान्य यज्ञों की निन्दा करते हुए मान्य यज्ञों को भी न छोड़ा, और वह इस स्थान पर आकर भूल कर गया।

मलूक पुत्त नामी एक मनुष्य जो बुद्ध का शिष्य था, एक बार बुद्ध से पूछने लगा महाराज मुझे समझ नहीं आती कि मृत्यु के अनन्तर क्या होता है? मुझे बतलाइये कि मृत्यु के बाद आत्मा रहता है अथवा नहीं।

बुद्ध—मलूक पुत्त! मुझे यह मालूम नहीं।

मलूक पुत्त—महाराज यह बड़ा आवश्यक प्रश्न है।

बुद्ध—जब मैंने तुम्हें शिष्य बनाया था तो क्या मैंने यह प्रण किया था कि तुमको यह बतलाऊंगा? मलूक पुत्र ने कहा नहीं।

बुद्ध—तो बस फिर क्या, केवल जीवन को पवित्र बनाओ, इन झगड़ों में न पड़ो। (इस प्रश्न का उत्तर वह न देसके) इसी प्रकार वह एक बार कन्नौज गये, और वहां एक हवन करने वाले को उपदेश किया, जिसने अपने हवन के पात्र नदी में बहा दिये। (बुद्ध ने ऐसी बातों में भूल की, नहीं तो वह ठीक था) जब बुद्ध बनारस में पहुंचे तो एक बाटिका में ठहरे, वहां एक

अमीर बड़ा दुराचारी था, और उसे अमीरी सता रही थी, वह विषय भोग २ कर दुःखी होगया था, उसे सुख दिखाई न देता था। उसको बुद्ध ने कहा, मेरे पास आओ मैं तुम्हें शान्ति दूंगा। इसके उपदेश से अमीर के विचारों में परिवर्तन होगया। इसके अनन्तर बुद्ध ने विचारा कि अपने विचारों को फैलाने के लिये यह आवश्यक है कि आदमी तैयार किये जावें ॥

इसलिये उसने साठ भिक्षु तैयार किये और उन्हें उपदेश दिया कि तुम दो भी एक दिशा में मिल कर कभी न जाओ। एक २ को भिन्न २ दिशा में भेज दिया, और उन्हें समझाया कि सचाई का उपदेश करें। अपनी रोटी मांग कर खायें और उपदेश करें। बुद्ध अपने लिये स्वयं मांगता था और उपदेश करता था, और उसके जीवन में सब से अधिक—

❀ हृदय विदारक घटना ❀

उस समय की है जब कि वह कपिल वस्तु में भीख मांगता है उसका पिता उसको बुरे २ शब्दों में सम्बोधन करता और कहता है, कि तूने हमारे वंश को कलंकित किया, परन्तु बुद्ध उत्तर देता है कि आपका वंश कदाचित् कलङ्कित होता हो, परन्तु हमारा वंश जो सुधारकों का वंश है, इस प्रकार से कलङ्कित नहीं होता, प्रत्युत इस में यही प्रथा चली आई है। इस भिक्षा मांगने ने उस नगर पर बड़ा प्रभाव डाला, सारे लोग उसके चरणों पर पड़ते थे। इस प्रकार सब से पहिला नियम जो उसने प्रचार के लिये नियत किया वह भिक्षुओं को तैयार करना और सरल जीवन बिताना था। परन्तु बुद्ध का काम यहीं तक समाप्त नहीं होगया, उसके चित्त में आया कि यदि पुरुषों को

सचाई दी जाती है तो स्त्रियों को क्यों न दी जावे ॥

परन्तु वह मानुषी त्रुटियों को जानता था, बहुत घबराया, कई साल इस प्रश्न पर विचार करता रहा, निदान उसने निश्चय कर लिया, कि शरीर के आधे अङ्ग को शिथिल कर देना ठीक नहीं, और इस काम के लिये उसने अपनी स्त्री यशोधा को अपना शिष्य बनाया, और उसने स्त्रियों में प्रचार आरम्भ किया, इस प्रकार से स्त्रियें प्रचारक के काम में बढ़ीं।

दूसरा नियम (साधन)।

जो उसने प्रचार के लिये ग्रहण किया, वह भाषा थी, वह लोगों को उनकी भाषा में उपदेश देता था, यद्यपि उन दिनों संस्कृत बोली जाती थी, पर बहुत थोड़ी, इस लिये प्राकृत भाषा में प्रचार आरम्भ किया।

तीसरा साधन

जिसकी ओर उसकी दृष्टि गई वह यह था कि जिन लोगों को उन दिनों अछूत या पतित समझा जाता था, उन में धर्म प्रचार का काम था। स्वभाविक ही वह लोग इस की ओर आये और इस के सहायक बने, उसने माली लोगों को उपदेश दिया, उन लोगों में से एक—

सुनीत माली

हुआ है जो अन्तको उन लोगों का लीडर (नेता) या मेम्बर बन गया था।

उन दिनों भी यही रोग था कि निचली जातियों को धर्म उपदेश न किया जावे, परन्तु बुद्ध इस नाड़ी को पहचान गया

और बहुत से लोग इसकी ओर आगये और बुद्ध धर्म इसी लिये फैल गया।

एक और बात जो उसने आवश्यक समझी वह बात

आत्म—समर्पण

थी, उसने अपना जीवन अर्पण किया, उसकी स्त्री ने अपना जीवन दे दिया, उसके बेटे (कराहल) ने यही काम किया और भिक्षुओं ने भी जीवन दान किये। इस प्रकार राजाओं और सहधर्मियों के आत्म समर्पण से यह धर्म फैलगया।

यही विशेष साधन थे जिन्होंने बुद्ध धर्म को सूर्य्य की न्याईं चमका दिया। बुद्ध ने सब से पहिले पुरुषों को उपदेशक बनाया फिर स्त्रियें उपदेशकायें उत्पन्न कीं। इस के अतिरिक्त अपना आत्म समर्पण, उसके अनुयाईयों का आत्म-समर्पण, पतित जातियों में प्रचार और उन से मेल मिलाप। इन सब बातों का फल यह हुआ कि करोड़ों ही आदमी इस धर्म के अनुयाई होगये ? इस के साथ ही उन्होंने विद्या के काम को हाथ में लिया।

और एक यूनीवर्सिटी (विश्व विद्यालय) उनकी रावलपिण्डी के पास तक्षला में थी दूसरी नालन्द में थी।

यह साधन हैं जिन की ओर हमें ध्यान देना चाहिये।



(दूसरा—लैकचर)

(ईसाई धर्म किस तरह फैला) ?

पहिला विचार जो मैं आपके आगे रखना चाहता हूं वह यह है कि हज़रत मसीह का जन्म उस जाति में हुआ जो कई दशाओं में और कई विचारों में हिन्दु जाति के साथ मिलती जुलती है। यह यहूदी जाति है, इतिहास से प्रतीत होता है कि वह एक बहुत प्राचीन जाति है, जिस प्रकार हिन्दु जाति प्राचीन है इसी भांति यहूदी भी एक प्राचीन जाति के हैं और इस जाति में

पैग़म्बरी का ख्याल

बड़ा प्रबल है इनकी दशा भी कुछ ऐसी थी कि इनको ईश्वर की ओर से पैग़म्बर आने का ख्याल प्रत्येक समय बना रहता था। इन में कई पैगम्बर हुए हैं मूसा इन को मिसर के दासत्व से निकाल कर (किनान में) ले आया, और इनको स्वाधीनता दिलवाई, इसी प्रकार इब्राहीम पैग़म्बर हुआ, और कई एक और हुए, जिन्होंने इन में प्रचार किया, और जिनके उपदेश अंजील में लिखे हुए हैं।

इस जाति में एक विशेष रीति खतने की प्रचलित थी खतने की रीति यहूदियों से निकली है और जैसाकि अब हमारा विचार है कि जिस मनुष्य के यज्ञोपवीत नहीं वह शूद्र होता है इसी प्रकार उस समय यहूदी ऐसे मनुष्य से (जिसका खतना न हुआ हो) खान पान बुरा समझते थे। यहूदी अपने आप को ईश्वर का स्नेही ख्याल करते थे, और समझते थे, कि

परमात्मा हम को प्यार करता है, और हम भी उसके प्यारे हैं, शेष लोगों पर उस की कृपा दृष्टि नहीं पड़ सक्ती।

जिसप्रकार हिन्दु लोग दूसरी जाति के लोगों के साथ खान पान अच्छा नहीं समझते इसी प्रकार यहूदी करते थे,वह अपने आप को सब से श्रेष्ठ और उच्च समझते थे। ईसामसीह के आने से पहिले यह लोग बाह्य आडम्बरों में बहुत ही बढ़ गये थे॥

और इनका विचार था कि रविवार को परमात्मा ने आराम किया और अञ्जील में भी ऐसा ही लिखा है। यहूदी शनिवार को आराम का दिन समझते थे उस दिन की पवित्रता के विचार ने इतना बल पाया कि इनमें एक फ्रेसीस नामी जाति उत्पन्न होगई, जो उस दिन बिलकुल ही काम न करती थी और ये लोग जब सुबह के समय जागते तो जिस कर्वट सोये हुए उठते उसी कर्वट दिन भर सोये रहते, और तनिक भी न हिलते थे। वे सोचते थे कि आराम के दिन काम नहीं करना चाहिये और काम करने से आदमी हिलता जुलता है, इसलिये हिलना जुलना भी काम में गिनना चाहिये, यदि हम ज़रा भी हिले तो काम हो जायगा, और हम ईश्वर की इच्छा को तोड़ देंगे, जिस से हम पापी ठहराये जायेंगे, यह ख्याल इन में प्रवेश कर चुका था। आराम के दिन के विषय में एक ऐतिहासिक घटना भी है और वह इस प्रकार कि एक बादशाह ने आराम के दिन यरोसलम पर आक्रमण किया और उस ने सोचा कि इस दिन बहुत से यहूदी लेटे ही रहेंगे और उसको सहिज में ही जय प्राप्त हो जायगी। इस से प्रगट होता है कि यह बाहिरी आडम्बरों के कितने दास थे। इसी पर एक यहूदी ने मसीह से प्रश्न किया था

तुम कैसे आदमी हो जो आराम के दिन भी इधर उधर फिरते रहते हो।

मसीह ने कहा यदि एक आदमी कुंए में गिर पड़े तो क्या तुम उसको निकालने के लिये हिलोगे या नहीं। यहूदी ने उत्तर दिया ऐसे बहुत से हैं कि आदमी डूब जाय परन्तु वह हिल कर पाप के भागी न बनेंगे॥

हम लोगों में भी यह भाव वर्तमान है और वह किसी और तरह से है। अभी थोड़े दिन की बात है कि एक बच्चा कुंए में गिर पड़ा और पुरुष वहां पर कोई न था, एक भङ्गी ने कहा कि मुझे कूंए में कूदने दो, मैं बच्चे को निकाल लाऊंगा। परन्तु हिन्दू स्त्रियों ने यह कहकर "कि कूआं अशुद्ध होजायगा" उसे रोक दिया और बच्चा कूंए ही में मर गया। इसी प्रकार के भाव यहूदियों में उत्पन्न होगये थे।

दूसरा विचार जो उनमें पैदा हुआ २ था वह मसीह का था। क्योंकि वह इन दिनों बड़े निर्दयी और धन हीन (तङ्ग हाल) थे इसलिये इनको विश्वास दिलाया गया था कि कोई ऐसा आवेगा जो उन्हें कष्टों से छुड़ा लेगा। निदान मसीह आया और उसने इन बुराइयों को देखकर प्रचार आरम्भ किया।

मसीह के उद्देश्य

विषयक एक विचार सुना जाता है और जो अञ्जील में भी देखा जाता है वह यह है कि उस ने पहिले यहूदियों का सुधार करना चाहा। पहिले उस के चित्त में यह भाव नहीं था, कि मैं सारे संसार के लिये प्रचार करूंगा। इस के विषय में एक घटना भी है। कहते हैं कि एक दिन एक भिन्न धर्म की स्त्री मसीह के

पास गई और उस से कुछ पूछा, तब मसीह ने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि मैं सुअरों के आगे मोती फैंकूं। पहिले यहूदियों को देलूं, फिर यदि बचा तो तुम ने ले लेना। मानों पहिले उसके मन में यह कभी आया ही नहीं था कि उसने दुनिया में उपदेश करना है। परन्तु फिर कालान्तर में उसका उद्देश्य बदल गया। उसके विचारों में भी भेद होगया और उसने इस मत को सारे संसार के लिये प्रगट किया।

मसीह ने केवल तीन वर्ष प्रचार किया, उसने अपनी तीस वर्ष की आयु में उपदेश करना आरम्भ किया और ३३ वर्ष की आयु में उसे फांसी पर लटकाया गया।

मसीह के प्रचार के तरीके।

मसीह ने जो तरीके वर्ते उन में से सब से पहिला तरीका यह था कि मसीह ने १२ शिष्य पैदा किये जिन को हवारी कहते हैं जिस प्रकार बुद्ध ने विशेष मनुष्य चुने, उसी प्रकार मसीह ने हवारियों को उपदेश दिया। इन की पहिले परीक्षा की, वह इन्हें शनैः२ एकान्त स्थान में उपदेश करता रहा अपने विचारों का बीज इन में बोता रहा और वह यह देखता रहा कि यह मेरे भक्त हैं या नहीं, जब उसे विश्वास होगया तो फिर मसीह ने इन को कहा कि मुझ पर विश्वास रक्खो और इस के लिये उस ने ऐसे हालात भी पैदा किये। और जो कहानियां अञ्जील में लिखी हैं जिन को करामातें कहा जाता है वह हवारियों को अपने पर भक्ति और विश्वास दिलाने के लिए घड़ी गईं।

'पितरस' के साथ दरया पर जाना और पितरस को

कहना कि जो मुझ पर विश्वास रख कर दरया में कूदता है याद रक्खो कि वह पार उतर जावेगा।

इसी प्रकार एक स्थान पर पांच हजार आदमी एकत्र थे उन को उपदेश दिया जारहा था परन्तु इन सब के भोजन के लिये केवल पांच रोटियें थीं उन को चिन्ता हुई कि दिन किस भांते कटेगा। इस समय मसीह ने कहा कि यही पांच रोटियां पांच हज़ार के लिये यथेष्ठ (काफ़ी) होंगी।

मसीह ने उनको विश्वास दिलाया कि :—

आत्मा, सत्य, और जीवन मैं हूं

उस ने अपने शिष्यों में इस भाव को कूट२ कर भर दिया और शिष्य उस के सच्चे अनुयायी बन गये। परन्तु समय बड़ा परिवर्तनशील है। यद्यपि उस के शिष्य दृढ़ व्रती और विश्वासी थे तौ भी इन में से एक शिष्य ने उस समय की सर्कार से मसीह के विरुद्ध कुछ कह दिया। उस ने कहा कि मसीह राज-विद्रोही विचार फैलाता है। वह निस्संदेह दृढ़ विश्वासी थे परन्तु फिर भी इन में त्रुटियां थीं एक बार पितरस ने कहा कि हे मसीह मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, इस पर मसीह ने कहा कि सूर्य्य चढ़ने से पहिले २ तू तीन वार अस्वीकार करेगा। और जब मसीह पकड़ा गया तो सिपाहियों ने पितरस को भी पकड़ा, इस पर उस ने कहा कि मैं तो मसीह को जानता भी नहीं, मुझे क्यों पकड़ा गया है। निदान कुछ देर के बाद उसे छोड़ दिया गया, फिर कुछ लोगों ने कहा कि यह तो उसका अनुयायी है इसे पकड़ लो, जब फिर उसे पकड़ा गया तो फिर उस ने अस्वीकार किया। इस तरह उन में भी धार्मिक निर्बलतायें आजाती थीं।

एक और विचार जो मसीह ने उन के बीच में उत्पन्न किया वह यह था कि :—

मैं फिर आऊंगा ।

और शीघ्र आऊंगा, मैं बादशाह बनूंगा, मसीहियों को बड़े बड़े अधिकार मिलेंगे। मेरे अनुयायियों का सन्मान होगा, इस ख्याल ने इन में यह परिवर्तन कर दिया कि मसीह की मृत्यु के उपरान्त उन्होंने एक कौन्सल बनाई, कौन्सल हवारियों की थी, जो अपना सब कुछ बेच बांट कर मसीह के होगये थे।

इसी भांति वह जिस किसी को मसीह बनाते उसको अपना यह सिद्धात बतलाते कि सोच न करना चाहिये क्योंकि हमारा हादी (पर्थ प्रदर्शक) आ रहा है, और वह बादशाह बनेगा। फिर भला हम क्यों जायदादें बनायें और धन एकत्र करें। जो मसीही होता था उसे अपनी सारी जायदाद धनसम्पत्ति बेच डालनी होती थी, वह सब कुछ बेच कर हवारियों के सुपुर्द कर देता था, जो उसे रोटी पहुंचाते जाते थे, और वह मसीह के लिये ही होजाता था, परन्तु इस पर भी कई सालों तक यह सत्तर ७० अस्सी ८० की संख्या से आगे न बढ़े। जब ऐसी अवस्था थी तो इन में एक और मनुष्य प्रगट हुआ जिसने मसीह से अधिक काम किया और मसीही धर्म का सुधार करके इसको नया जीवन प्रदान किया यह मनुष्य :—

सैंट पाल

था यदि यह प्रगट न होता, तो मसीही धर्म भी यहूदियों की और बहुत सी शाखाओं की भांति एक शाखा होजाता। सैंट

पाल जिस प्रकार मसीहियों में आया वह केवल एक अद्भुत घटना ही नहीं प्रत्युत हृदय विदारक भी है।

सैंट सिटीफ़ंन पक्का मसीही था और उस समय यहूदी मसीहियों के नितान्त शत्रु होरहे थे। और इनमें पत्थरों से मारने की एक कुप्रथा प्रचलित थी, वह कई लोगों को पत्थरों से मार डालते थे। सैंट सिटीफ़न पकड़ा गया और इसी तरह यहूदियों ने उसे पत्थरों से मार डाला, पत्थर मारने वालों में से एक सैंटपाल भी था, जिसने मारने के किये पत्थर उठाया। परन्तु मानुषी जीवन में ऐसे समय पर, जब कि कोई अपने विश्वास के लिये चाहे वह कैसा ही कड़ा हो जान देता है तो बड़ा असर होता है। सैंट पाल ने जब यह दृश्य देखा तो उसके हृदय पर एक चोटसी लगी और वह कुछ समय के अनन्तर ईसाई होगया। इससे पहिले जितने हवारी थे वह सब अनपढ़ थे, परन्तु यह विद्वान् और पढ़ा लिखा था, इसमें एक और गुण था कि वह बड़ा जोशीला था, जब यह इन में सम्मिलित होगया तो :—

ईसाई धर्म में गड़बड़

उत्पन्न होगई। मसीह को मरे अभी केवल ११ ग्यारह ही वर्ष हुए थे कि झगड़ा आरम्भ होगया, हवारी कहते थे कि ईसा मसीह का धर्म केवल यहूदियों के लिये है। सैंट पीटर और सैंट जेम्स जो मसीह के दो शिष्य थे कहते थे कि कोई मनुष्य ईसाई नहीं होसकता जब तक उसकी सुन्नत न की जावे और जब तक यहूदियों की और बात स्वीकार न करे।

सैंटपाल ने कहा कि जो यहूदी नहीं और मसीही होते हैं यह आवश्यक नहीं कि वह रसमें इनसे जबरदस्ती कराई जायें।

लिखा है कि एक चादर आसमान से उतरी उसमें भांति २ की खाने योग्य वस्तुयें थीं। सेंट पीटर ने कहा, कि मैं इन में से कैसे खाऊं, क्योंकि इनमें हराम (न खाने योग्य) वस्तुयें रक्खी हैं। उस समय आकाश से एक शब्द सुनाई दिया कि जिस वस्तु को मैंने भोज्य लिखा है तू उसे कैसे अभोज्य कहता है ? फिर उसने खा लिया। जिस समय यह झगड़ा उत्पन्न हुआ कि दूसरों के साथ खा लेना चाहिये या नहीं तो उस समय कई सैंटपाल की ओर होगये और कई उसके विरुद्ध होगए। सैंटपाल ने एक और विचार लोगों के आगे रक्खा और उसने यह विचार यहूदियों के एक नियम से लिया था कि बाबा आदम ने क्योंकि पाप किया है इसलिये सब मनुष्य पापी होगये हैं सैंटपाल ने कहा कि जब एक आदमी के पाप करने से पापी बन गये हैं, तो पापों के बदले एक आदमी के फांसी लेने से सब के पाप दूर होगए हैं। उसने उन्हें बतलाया कि यदि तुम ईमान लाओगे तो पवित्र बनोगे और क्षमा किये जाओगे। नहीं तो नरक कुण्ड तुम्हारे लिये तैयार है। यह आशा और यह डर सैंटपाल ने लोगों को दिखाया।

सैंटपाल के प्रचार का तरीक़ा

बड़ा विचित्र था, वह जिस स्थान पर जाता था वहां दो तीन या चार दिन नहीं ठहरता था प्रत्युत छः सात मास रहता था वहां पर वह दुकान खोल लेता था और रस्से बनाकर बेचता और अपनी रोटी कमाता था, जब वह यह देख लेता कि अब मैंने रोटी के लिये पैसे कमा लिये हैं तो वह झट उसे छोड़ कर प्रचार के काम में लग जाता था।

वह यहूदियों के गिरजों के पास चला जाता और बाहर खड़ा होकर गिरजा में जाने वाले और गिरजा से आने वाले लोगों को उपदेश देता था। शनैः २ वह उनको रात को बुलाता और वह आकर इसका उपदेश सुनते। वह अपना धार्मिक जीवन इनके हृदयों में प्रवेश करता और जब देखता कि कुछ जीवन वाले मनुष्य उस स्थान पर उत्पन्न होगये हैं तो दूसरे स्थान पर जाकर इसी विधि से प्रचार करता।

सैंटपाल का काम शान्ति से नहीं होता था, क्योंकि सैंटजेम्स ने सैंट पाल के पीछे आदमी छोड़े हुए थे। जो सैंटपाल के लैक्चर वाली जगह जाकर कहते थे कि इसका लैक्चर मत सुनो। यह मसीह का अनुयायी नहीं। यह लुच्चा और वदमाश (दुराचारी) है परन्तु वह अपना प्रचार बराबर किये जाता था।

ईसाई मत इस तरह से कदाचित अधिक न फैलता, क्योंकि यरोसिलम में बैठे हुए हवारी यदि आज्ञायें जारी कर देते तो सैंटपाल का काम रुक जाता। इनके साम्हने इनकी सौभाग्यता से एक बड़ी कठिनाई आगई। और वह यह थी कि यरोसिलम में हवारियों पर जुलम (निर्दयता) होने लगे। और वह तंग होकर इधर उधर भाग गये। जहां २ कोई गया, उसने प्रचार का काम आरम्भ किया, और ईसाई मत को फैलाने लगे। वह जहां गये वहां पर उन्होंने लोगों को मसीह का उपदेश सुनाया। (मैं कहूंगा, जब तक हर एक आदमी उपदेशक नहीं बनता, तब तक धर्म्म की उन्नति नहीं होसकती। पहिले २ समाज में जो कोई मेम्बर होता था वह यह आवश्यक समझता था कि दूसरों

को भी वैदिक धर्म्म से परिचित करूं । और कई एक ऐसे भद्र पुरुष हैं कि वह जहां गये हैं उन्होंने वहां ही समाज स्थापित किया है, जिस स्थान पर इनकी नौकरी के कारण बदली हुई है उन्होंने वहीं आर्य्य समाज का झंडा गाड़ा है। इस प्रकार के यदि भाव हों तो जितनी बदली होगी उतना अधिक प्रचार होगा) यही विचार उस समय उनमें वर्तमान था । उनमें एक और विचार था जो उनमें प्रवेश कर गया था कि :—

संसार शीघ्र नष्ट होजाने वाला है

अर्थात् यहां की वर्तमान अवस्था सब नष्ट होकर मसीह आयेंगे और वह बादशाह बनेंगे । इस विचार ने उनमें तपस्वी उत्पन्न कर दिये । तपस्वियों की एक प्रकार की जाति बन गई थी, वह जङ्गलों में बनों में और एकान्त स्थानों में तप करते थे। तीस २ दिन तक व्रत रखते थे, वह अपना जीवन बड़े अद्भुत प्रकार से व्यतीत करते थे। वह उस समय तपस्या को आवश्यक समझते थे और सभी इस विचार में बैठे थे कि अभी मसीह आता है और उसकी बादशाहत (राज्य) होगी । इन मनुष्यों के जीवन का लोगों पर बड़ा प्रभाव हुआ और बहुत से लोग इनमें सम्मिलित होगए ।

एक और सिद्धान्त जो इनमें प्रचलित था उसने अद्भुत रूप धारण किया । अर्थात् वह केवल एक ईश्वर को वा मसीह को मानते थे, और दूसरे लोग उस समय के बादशाह की मूर्ति बना कर पूजते थे, उस समय बादशाह का बड़ा बल होता था, लोग देवी देवताओं के साथ अपने बादशाह की भी मूर्ति बना कर उसकी धूप दीप से पूजा करते थे । उसकी आर्ती पढ़ते

और उसके आगे चढ़ावे चढ़ाते थे। हजारों लोग बादशाह के मन्दिर बना कर उसकी पूजा करते थे। लोगों ने मसीहियों को कहा कि तुम बादशाह की पूजा क्यों नहीं करते। तो उन्होंने कहा कि हम बादशाह की प्रजा हैं हम उनका आदर (मान) करते हैं परन्तु सिवाय परमात्मा के और किसी का पूजन नहीं करते। उन्होंने मूर्ति पूजा अस्वीकार की।

इस के साथ उन में यह ख्याल भी उत्पन्न होगया था कि जब हम देवी देवताओं को नहीं पूजते तो उन के त्योहारों को क्यों मानें तात्पर्य्य यह कि ईसाई दूसरे लोगों से दो बातों में अलग होगये, अर्थात् बादशाह की पूजा और देवी देवताओं के त्योहारों में सम्मिलित न होना। तब लोगों ने कहना आरम्भ किया कि—

ईसाई बाग़ी हैं

और यह बादशाह के विरोधी हैं। और जब यह रात को एकत्र होते हैं तो एक बच्चे को मार कर जन्त्र मन्त्र करते रहते हैं (इन के जलसे रात को ही होते थे और केवल ईसाई ही सम्मिलित होकसते थे) अब

मसीही मत पर कड़ाईयां

आरम्भ हुई (आप उस दृश्य का विचार तक नहीं कर सकते, आप सुख और शान्ति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं, और एक शान्त समय में बास कर रहे हैं, आप उस आपद क्लेश और दुःख का एक अंश भी नहीं जान सकते जो उस समय ईसाइयों ने सहन किया) उस समय नीरो नामी एक बादशाह

था उस का काम था कि एक ईसाई को पकड़ता, लोगों को प्रीति भोजन देता। एक ओर भांति२ के भोजन किये जाते थे, और दूसरी ओर १ ईसाई के बदन पर रुई लपेटी जाती थी और ऊपर तेल डालकर उसे वृक्ष से बांध कर आग लगा दी जाती थी उसकी चीखें निकलती थीं उसे तड़पते को देखकर बादशाह प्रसन्न होता था, ईसाई को कहा जाता था कि मसीह को न मानो तो छोड़ दिये जाओगे, परन्तु मसीही ऐसा करने का ख्यालतक भी न करता था। इस तरह कई बालक जलाये गये। शेरों(सिंहों) के आगे डाले गये। हाथियों के पैरों तले रौंदे गये। बूढ़ों का चमड़ा उधेड़ा गया और जलाया गया।

ईसाईयों की सौभाग्यता

से अञ्जील में एक वाक्य था जो अपने धर्म पर पक्का रखता था और वह मसीह का यह कौल था कि वह लोग जो औरों के आगे मुझे स्वीकार न करेंगे, मैं ईश्वर के आगे उन को स्वीकार न करूंगा।

इसलिये ईसाई मरते समय तक उस से मुनकर (विरुद्ध) होजाने का शब्द न निकालते थे। परञ्च स्वीकार करते जाते थे ताकि क्षमा किये जावें। इतिहास बतलाता है कि रूम का सारा इतिहास ईसाईयों के रक्त से रंगा हुआ है। अन्त में इस का क्या परिणाम निकला, यही, कि मसीही धर्म अधिक बलवान होकर फैला। मसीह के बारह शिष्यों में से कदाचित एक ही अपनी मौत मरा है शेष ग्यारह लोगों के हाथों से भान्ति २ के कष्ट देकर मारे गये। एक और बात जो उन्होंने ग्रहण की वह यह थी कि उन्होंने

निर्धनों में काम

करना आरम्भ किया । सहस्रों निर्धन उन की शरण में आगये । यद्यपि उन की उन्नति रुकती रही, परन्तु जो एक बार ईसाई होजाता था वह फिर टलने वाला न होता था । एक और बात जिसने इन को उन्नति पर पहुंचाया यह थी कि ईसाई एक सिलसिले में बांधे गये । रूम के पोप की शक्ति के वर्णन करने की आवश्यकता नहीं सब उसी के आधीन काम करते थे और उस से तनिक भी इधर उधर न जाते थे। परन्तु इन में सिद्धान्तों के झगड़े बड़ी प्रबलता से उत्पन्न होगये । एक ईसाई कहता था कि बाप बेटा और रूह उलकुदस एक ही है और दूसरा कहता था कि बाप बेटा वैसे हैं । इस वही और वैसे पर प्रबल वाद विवाद हुआ, बड़ी कौन्सलें (सभायें) हुईं । बहुत समय तक यह झगड़ा होता रहा पहिले बहुत सी अंजीलें थीं। निदान एक कौन्सल हुई और उस ने मसीह के केवल चार जीवनों को यथोचित समझा, शेष अंजीलें जला दी गईं आज उन पुस्तकों के नाम तक भी कोई नहीं जानते (यह होते हुए भी कि इन में इतने झगड़े सिद्धान्त पर हुए फिर भी यह धर्म्म फैला)

इस का कारण

यह था कि इन में ऐसे२ ब्रह्मचारी पुरुष और स्त्रियें प्रगट हुईं जो प्रचार के लिये निकलीं । वह सारे एक ही ताने में तने जाते थे और सारे ही रूम के बिशप(पादरी)की गद्दी के अधीन समझे जाते थे। प्रचार के इस तरीके ने ईसाई धर्म को चमका दिया। आज जो लाखों रुपैये ईसाई धर्म के प्रचार के लिये इङ्गलिस्तान देता है वह मसीही धर्म में कैसे आया उसका एक अद्भुत हाल है

इतिहास इंगलिस्तान का मसीही होना

इस प्रकार आरम्भ करता है कि फ्रांस के बादशाह की लड़की कैंटरबरी के बादशाह से व्याही गई। और उस लड़की ने कहा कि मैं व्याह तब करूंगी जब कैंटरबरी में गिरजा बनाया जावे बादशाह ने कैंटरबरी में गिरजा बना दिया। वह लड़की आई और नित्य उस ने गिरजे जाना आरम्भ किया। और शनैः २ उस ने अपने पति को ममीही बना लिया। और अपने बाप को भी लिखा कि कुछ मसीही भेजो जो यहां प्रचार करें, इस प्रकार कैंटरबरी में ममीही धर्म फैल गया इसी भांति कैंटरबरी के बादशाह की लड़की का विवाह हम्बरिया के बादशाह से हुआ वहां जाकर उस लड़की ने पादरियों को मंगवाया और पति को ईसाई मत पर ले आई। इसी प्रकार दक्षिणी इंगलिस्तान में हुआ, वहां पर भी यह धर्म लड़की द्वारा ही फैला है (मानों कि इङ्गलिस्तान में ईसाई धर्म का बीज एक दो लड़कियों द्वारा डाला गया, और इस प्रकार सामाजिक सम्बन्ध से यह धर्म वहां फैल गया) यही हाल जर्मनी का हुआ। कई लोग कहते हैं कि मसीही धर्म तलवार के बल से नहीं फैला, परन्तु शार्लेमैन ने लोगों पर केवल मात्र इस लिये आक्रमण किये कि वह लोग मसीही न थे और उन को अन्त में ममीही बनाकर छोड़ा। वह एक बार में पचास २ आदमियों का बध कर डालता था, यह इस लिये कि वह मसीही धर्म में नहीं आते थे। इस पर भी मसीही धर्म तीन सौ साल तक

ग़रीबों का धर्म

बना रहा, हां फिर कांसटन टाइन ने इन को सहायता दी और वह भी उस समय जब यह स्वयं कुछ फैल चुका था क्योंकि कांसटन टाइन तो मरते समय ही ईसाई हुआ था।

अब हम ज़रा इन के प्रचार की ओर देखें

१-इन पर सख़्ती (कड़ाई) का होना जिस से यह धर्म के पक्के होगये।

२-इन में एक ख़्याल ने त्यागी उत्पन्न कर दिये और पुरुष और स्त्रियां ब्रह्मचारी रह कर प्रचार करने लगीं।

३-ईसाई धर्म एक सिलसिले में बन्धा रहा।

इस के फैलाव के यह आरम्भिक साधन थे।

इस के अन्तर इस में और भी साधन आगये, जब इतना प्रचार हो चुका तो इन में एक और झगड़ा पैदा होगया। और इससे कैथलिक और प्रौटिसटैन्ट दो समुदाय उत्पन्न होगये और फिर इन दोनों फिरकों (समुदायों) ने अपने स्कूलों और कालिजों के द्वारा लोगों में अपने विचार फैलाये॥

इनमें विशेष प्रकार के विचार उत्पन्न किये गये, (कष्ट सहना, दुःख उठाना, धर्म के लिये भांति २ की आपदाएं सहाना) इस अङ्ग ने इनमें अधिक शक्ति प्राप्त करली। फल यह हुआ कि सारे ही इसके लिये प्रयत्न करने लगे। जो इस काम के लिये उत्पन्न होगये थे उन लोगों का जीवन आश्चर्यप्रद था। धर्म फैलाव का इतिहास बतलाता है कि जो लोग धर्म से अधिक किसी और वस्तु से प्यार करते हैं वह धर्म को नहीं फैला सकते जो अपने में धर्म के लिये दुःख सहना और कष्ट उठाने वाला

अंग बलवान नहीं कर लेते वह अपने धर्म को बढ़ा नहीं सकते। ईसा मसीह यदि केवल यहूदियों तक ही अपने धर्म को रोक रखता तो वह कभी कृत-कार्य न होता। और वह सारी दुनियां को जीत न सकता, यदि उसके उद्देश्य वहीं रहते, यदि वह धर्म के साम्हने सारी वस्तुओं का त्याग न कर देते, यदि वह जीवन जैसी प्यारी वस्तु को धर्म पर निछावर न कर देते, तो वह उन्नति न कर सकते। यदि इनमें ऐसे पुरुष और स्त्रियां न उत्पन्न होतीं जो ब्रह्मचारी रहकर प्रचार करतीं, यदि इनमें ऐसी रानियां न उत्पन्न होजातीं, जो अपने पतियों को इस धर्म पर न ले आतीं और अपने रक्त की मुहरें उस पर न लगातीं, तो यह धर्म कभी आगे बढ़ न सकता, यदि इसमें विश्वास न होता यदि वह ईश्वर पर भरोसा न करते, तो इनकी उन्नति होनी कठिन थी (इन्हीं साधनों द्वारा यह धर्म फैला)

दो लड़के

आक्सफोर्ड के कालिज में पढ़ते थे वह देखते हैं कि ग़रीबों को गिरजा में दाखिल होने में कष्ट होता है वह उठते हैं और गिरजे से बाहर लोगों को मसीह का उपदेश सुनाते हैं छकड़े पर खड़े होकर वह प्रचार करते हैं। सहस्रों लोग आस पास एकत्र हो जाते हैं और फिर उस स्थान पर जहां एक गिरजा है वहां सहस्रों गिरजे बनाए जाते हैं इन्हीं दो लड़कों के प्रयत्न से इस समय ५० लाख आदमी इन्हीं का प्रचार कर रहे हैं मेथोडिस्ट मिशन (जिस के आश्रय कई एक संस्थाएं चल रही हैं, इन्हीं दो लड़कों के परिश्रम का फल है। यह जीवन है जिसकी भड़क हरएक के

अन्दर होनी चाहिये जहां यह नहीं वहां प्रचार नहीं होसकता वह लोग जो केवल हिसाबी हैं और हिसाब में लगे रहते हैं जिनको ईश्वर पर भरोसा नहीं, वह काम नहीं कर सकते।

तीसरा लैक्चर

(यवन मत कैसे फैला)

यवन मत का उदय जैसा कि प्रकट है मुहम्मद साहिब से हुआ। जब मुहम्मद साहिब अरबस्थान में उत्पन्न हुए तो वहां के लोगों की दशा बहुत शोचनीय थी। एक २ गांव में सहस्रों बुत होते थे जिनकी पूजा की जाती थी। स्त्रियों की प्रतिष्ठा में इतनी कमी आगई थी कि वह अप्रतिष्ठा ही गिननी चाहिये। जैसे हमारे यहां राजपूत राजे सौ २ स्त्रियां कर लेते थे। वैसे ही वहां पर अनगिनत स्त्रियें कर लेते थे। और उनके यहां इस की कोई निन्दा नहीं की जाती थी। इसके अतिरिक्त इनमें राजपूतों की भान्ति प्रतिष्ठा (मान) का झूठा विचार बैठ गया था। जिसतरह राजपूत अपने मान के बनाए रखने के लिये निरापराध कन्याओं को मार डालते थे इसी भांति वह लड़कियों को मार डालते थे।

अरब स्थान के लोग अपनी लड़कियों को जब वह छः या सात साल की होती थीं मार डालते थे। और उसका तरीका यह था कि पिता कन्या को बाहर लेजाता था और वहां आगे ही एक गढ़ा खोदा हुआ होता था, पहिले वह स्वयं उस गढ़े के पास जाकर उसे देखता था फिर लड़की को पास लेजाकर उसे कहता था कि देखो यह क्या है (बच्चों में यह प्राकृतिक बात है कि वह नयी वस्तु को बड़े चाव से देखते हैं) ज्यों ही वह देखने

के लिए गढ़े की ओर झुकती पिता अपनी कन्या को झट धक्का दे देता था। फिर स्वयं ही उस पर मिट्टी आदि डाल देता था और इस भान्ति वह जीवित बच्चे को गाड़कर वापिस आता था और माता पिता इस प्रकार के वर्ताव अपनी सन्तानों पर स्वयं ही करेत थे। इस बुराई के अतिरिक्त एक और दोष इनमें यह था कि वह आपस में एक दूसरे के रक्त के प्यासे होरहे थे। एक अरबी दूसरे अरबी को मार देता था। उनका इधर उधर जाना अपने आपको नष्ट करना था, इनमें केवल एक महीना होता था जिसमें यह लड़ाई झगड़ा बन्द रहता था और वह मक्के के आस पास घूमने के लिये नियत था। इस महीने में हज्ज किया जाता था इस महीने में यदि कोई इधर उधर जाता था तो उससे कोई आदमी लड़ाई दंगा नहीं करता था। परन्तु उस महीने के आगे या पीछे मार धाड़ ही पड़ी रहती थी। वह एक दूसरे को दास बना लेते थे। इनका काम केवल लूटना मारना था और उस देश में दास बनाने की प्रथा तो अबतक प्रचलित है॥

मुहम्मद साहिब का व्योपार

मैं यह भी प्रकट कर देना चाहता हूं कि वहां पर दो प्रकार की बस्ती थी, यहूदी और ईसाई दोनों वहां बसते थे। इसी दशा में मुहम्मद साहिब यहां पर उत्पन्न हुए। मुहम्मद साहिब पहिले व्योपार करते थे वह दमिश्क आदि की ओर माल लेजाते थे और वहां से माल लाते थे इसप्रकार २२वर्ष की आयु तक करते रहे। २५ वर्षकी आयुमें उन्हों ने विवाह किया, और फिर इसके अनन्तर उनके मनमें यह विचार उत्पन्न हुआ कि मैं किसी धर्म का प्रवर्त्तक बनूं॥

प्रारम्भिक दशा

इस विचार ने इनमें घर कर लिया और अन्त में यह विचार बाहिर प्रकट हुआ और उन्हों ने दूसरों को इस में लाने का प्रयत्न किया। इस समय इनकी दशा कुछ शिथिल सी थी और इसलिये इनके इतने समय के उपदेश से कोई अच्छा फल न हुआ १३ वर्ष तक वह मक्के में उपदेश करते रहे परन्तु ५० । ६० से अधिक आदमी इनके अनुयायी नहीं हुए । मुहम्मद साहिब ने सबसे पहिले अपनी स्त्री को अपने धर्म का उपदेश दिया, और सब से पहिले जो उन पर विश्वास लाई वह उनकी स्त्री थी। उनकी स्त्री जब उनकी सहधर्मिणी होचुकी, तो उसने और स्त्रियों को उपदेश करना आरम्भ किया, मुहम्मद साहिब का सौभाग्य समझिये, अथवा दैवयोग समझिये कि उन पर आस पास से कठिनाइयां पड़ती थीं, कई वार उनके शरीर पर आक्रमण किये गये एकवार तो कुछ घातकों ने उनके मारने में कसर न रक्खी थी परन्तु समय पर मुहम्मद साहिब को पता लग गया और घातकों के सारे विचार मिट्टी में मिल गये।

उनकी बिरादरी भी उनसे विरोध रखती थी। और केवल उनके लिये एक बिरादरी एकत्र होगई (मिल गई), उस में मुहम्मद साहिब के दादा को कहा गया कि अपने पोते को समझाओ। हजरत अली ने कहा कि यदि उसने समझने से नाहीं करदी तो फिर, उसे कहा गया कि यदि ऐसा हुआ तो फिर तुमने उससे नाहीं कर देना। हजरत अली ने कहा कि यदि चांद मेरे बाएं और सूर्य दाएं ओर भी आबैठें और मुझे कहें

कि तू मुहम्मद पर से ईमान हटा ले (उस पर विश्वास न कर) तो मैं फिर भी यह मानने को तय्यार नहीं हूंगा ॥

उन्नति का मार्ग ।

इससे बढ़कर मुहम्मद साहिबने कुछ आगे पैर रक्खा, और मदीना के कुछ लोग उनके पास उपदेश सुनने के लिये आगये, और इस तरह मदीने में सत्तर आदमी उन के अनुयायी बन गये । क्योंकि मक्के में उन पर बहुत क्रूरता का वर्ताव होने लगा था इस लिये वह वहां से भाग गये । जिस वर्ष से यह मक्के से भागे उसी वर्ष से हिजरी का सन है (अर्थात् अलग होजाने, हिजर हो जाने का साल) मक्के से भाग कर आप मदीने में पहुंचे । यहां पहुंच कर मुहम्मद साहिब ने अपनी चाल को बदल दिया । इस से थोड़े ही काल में आप के आस पास बहुत सुदृढ़ आदमी एकत्र होगए, और इस से मुहम्मद साहिब ने भी लूट मार के काम में भाग लेकर तलवार हाथ में ली और अपना मत फैलाना आरम्भ किया ।

मुसलमानी इतिहास

में पहिली बात यह आती है कि इस धर्म का आरम्भ विश्वास से हुआ,परन्तु थोड़ी देर के लिये उन्हें तलवार भी हाथमें लेनी पड़ी । इस से अरब स्थान में एक लहिर फैल गई मुहम्मद साहिब ने अपने विरोधियों (मूर्ति पूजकों और क़ाफ़रों) से लड़ाई की । क्योंकि मुहम्मद साहिब समझदार थे और उन के आस पास बलवान लोग एकत्र हो गए थे, इस लिये यह आवश्यक था कि इन को हर एक समय पर विजय प्राप्त होती ।

जिन को यह विजय करते थे, उन को अच्छी तरह अपने में मिला लेते थे। जब अरब स्थान के लुटेरों को यह विदित हुआ कि मुहम्मद साहिब के समूह में रहने से लाभ है तो वह उन से आ मिले। सांसारिक लाभ के साथ २ इन को धर्म का भी ख्याल आ जाता था इस लिये बहुतेरे लुटेरे आन मिले, लोगों में एक यह झूठी बात फैली हुई है कि यह मत केवल तलवार से फैला है।

तलवार के साथ ही इन में ईश्वर विश्वास था और यह विशेष बात इन को हर एक काम में सफलता प्राप्त कराती थी। ईश्वर पर भरोसा और तलवार को लेकर उन्हों ने अरबस्थान में अपना मत फैलाया। और सारे अरब स्थान को (जिस में नित्य लड़ाई दंगा होता रहता था) एक कर दिया। मुहम्मद साहिब की जब मृत्यु हुई तो यद्यपि उनका मत उन्नति पर था परन्तु इस की बहुत प्रशंसनीय दशा न थी॥

कुरान का पुस्तकाकार

मुहम्मद साहिब जब तक जीवित रहे इन के लिये (वही) उतरती रही उन का यह नियम था कि जो वही उतरती वह उसे किसी पट्टी या हड्डी पर लिख कर एक सन्दूक में बन्द कर देते थे। जब इन का देहान्त होगया तो उस सन्दूक को खोला गया। और उन पट्टियों और हड्डियों की नकल उतार कर उन्हें पुस्तकाकार बनाया गया। उस दिनों कुरानों में बहुत विरोध था। किसी के पास किसी प्रकार और दूसरे के पास अन्य प्रकार का कुरान था उस समय छापा तो बना ही नहीं था। इस लिये अपने हाथ से जो चाहता था लिख लेता था इन

के उपरान्त चार मित्र थे जो इन के सिंहासन पर आरूढ़ हुये। इन को खलीफ़ा कहते हैं। और मुहम्मद साहिब के अनन्तर इन खलीफ़ों ने धर्म फैलाने का ज़िम्मा लिया॥

खलीफों का सादा जीवन

इन सबका सरदार अबूबकर था जो उमरमें भी बड़ा था, जो रुपया उसे राज्य से प्राप्त होता था वह अपने लिये उस में से एक कौड़ी भी व्यय न करता था और मुसलानी धर्म के प्रचार के लियें ही उसे व्यय करता था॥

एक अवसर पर फारस का एक दूत किसी आवश्यक बात पर सम्मति लेने के लिये अबूबकर के पास आया वह पहिले मसजिद में पहुंचा और पूछा कि खलीफा अबूबकर साहिब कहां हैं लोगों ने कहा कि वह अभी आते हैं, इतने में खलीफा साहिब आये उन के हाथ कीचड़ में लिपटे थे उन का नियम था कि ईंटें थाप कर उस से अपनी रोटी का निर्वाह करें हाथ धोकर वह दूत के साम्हने आये और उसे कहा कि किस को पूछते हो, दूत ने उत्तर दिया कि खलीफा साहिब को मिलना है। खलीफा साहिब ने कहा कि मैं ही हूं। इस से आप को प्रतीत होगा कि इन का जीवन कितना सादा होता था। इस के बाद खलीफ़ा उमर हुआ है उस के पास भी एक चादर और एक कुड़ता होता था। एक अवसर पर उस की फौज ने लूट मार की, और लूट की वस्तुयें बांटने पर खलीफा को एक चादर और एक कुड़ता मिला। दूसरे दिन लोगों ने देखा कि खलीफा के पास दो कुड़ते हैं लोगों ने कहा कि आप धर्मात्मा नहीं, क्योंकि आप को केवल एक२ वस्तु दी गई थी, खलीफा

उमर ने अपने पुत्र को बुलाया और कहा कि इस का उत्तर दो, उस के लड़के ने कहा कि जो चादर मुझे मिली थी उस का कुड़ता मैंने इन को सिलवा दिया है। क्या यह घटना हमें नहीं बतलाती कि स्वयं खलीफा और उस के साथ ही उस के अनुयायी भी उस को सादा रहने पर मजबूर करते थे। खलीफा उमर ने एक बड़ा काम जो किया वह यह था कि उसने कुरान की सारी प्रतियें एकत्र करवाई और एक कापी (प्रति) के बिना सब को जला दिया। यदि उस समय छापे खाने होते तो कुरान की दूसरी प्रतियें नष्ट न हो सकतीं परन्तु दूसरे प्रकार से इस की केवल एक ही प्रति रह गई।

मुख्य साधन

सब से अधिक और विशेष कारण जो इस मत के फैलने का हुआ वह एक विशेष और मुख्य साधन है। अर्थात् उन्हों ने अपने अनुयायियों में एक विशेष प्रकारका उत्साह उत्पन्न किया (दूसरे) जिस प्रकार से ईसामसीह और बुद्ध देव चले (काम करते रहे) उस ने इन से भिन्न प्रकार से काम करना आरम्भ किया। मसीह और बुद्ध ने ब्रह्मचारी प्रचारक तैयार किये, दोनों ने इस प्रकार के जीवन को और उन को उत्तम कहा। परन्तु इस ने विशेष प्रचारक उत्पन्न किये, मरते दम तक गृहस्थी बने रहने का उपदेश दिया। वह स्वयं भी मृत्यु पर्यन्त गृहस्थी रहे। मुहम्मद साहिबने अपने अनुयायियों में धर्म के लिये प्रबल उत्साह उत्पन्न किया।

उत्साह का बल

और इस उत्साहने उस के अनुयायियों को लोहे की लाठ

बना दिया। इन के एक बृद्ध नेता खालिक नामी ने उत्साह में वह २ प्रशंसनीय कार्य किये कि इन को सुन कर लोग चकित रह जाते हैं। तारू नामी एक और इन का अनुयायी था उस में असीम उत्साह था (सपेन और अफ़रीका के बीच में समुद्र है) उस ने चाहा कि मैं सपेन पर चढ़ाई करूं और वहां जाकर मुसलमानी धर्म का प्रचार करूं। परन्तु उस समय समुद्र को पार करने का कोई साधन या रास्ता न था। निदान उत्साह से ही उस ने अपने घोड़े को समुद्र में डाल दिया और कहा कि हे समुद्र ! तू मुझे क्यों रोकता है, रस्ते से हट जा, क्योंकि मैं चाहता हूं कि वहां जाकर मुहम्मद साहिब का झंडा गाडूं। (उस के इस प्रकार के उत्साही अनुयायी थे) इन में कोई विशेष ऐसी सभा न थी जो उपदेशक उत्पन्न करे या बनाये। मनुष्य स्वयं ही उपदेशक बन जाते थे, परन्तु इसलाम ने इनको उपदेशक नहीं बनाया। इनका नियम ही यह था कि जिसके मन में आगया, उसने ही प्रचार आरम्भ कर दिया। पहले २ मुसलमानों का सम्बन्ध उन लोगों से हुआ जिनके हाथमें तलवार थी, इस लिये उन के हाथ भी बलवान हो गए। और अन्त को इन का जत्था हिन्दोस्तान में भी आया ॥

हिन्दोस्तान में मुसलमानी धर्म

हिन्दोस्तान में मुसलमानी धर्म कैसे आया, मैं कह आया हूं कि इन का एक जत्था यहां आया। यद्यपि वह पक्के मुसलमान थे परन्तु फिर भी इन में एक और शाखा उत्पन्न होगई जिस को लोग सूफी के नाम से पुकारते हैं। साधारणतयः उन का यह नियम था कि वह हिन्दू व मुसलमान दोनों को अच्छा

समझते थे, बाबा फरीद आदि इन्ही में से थे। उन्होंने तपस्या के साधन को ग्रहण किया और तप का भाव इन में उत्पन्न हुआ इसका प्रभाव लोगों पर अच्छा पड़ा। बाबा फरीद के विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह ऐरावती (रावी) नदी के तीर पर रहते थे इन का टिल्ला अब तक वर्तमान है। इन की तपस्या इतनी बढ़ी हुई थी कि मिट्टी के ढेर के ढेर उन के शरीर पर जम जाते थे। इस तपस्या ने लोगों को वहां खैंचा और हिन्दू वहां जाने लगे। वह कहते थे कि मुसलमान क्या और हिन्दू क्या दोनों अच्छे हैं। वहां बहुधा मुसलमान ही बैठते थे। उन की सङ्गति से हिन्दू मुसलमान होने लगे। (सङ्गति का प्रभाव बहुत प्रबल होता है) और इस के साथ हिन्दुओं के अपने अपने विचार के अनुसार वह मुसलमान हो गया जो मुसलमानों के सङ्ग उठने बैठने लगा। जो उन के पास आते वह इस तरह मुसलमान हो जाते थे और वह इन को समाजिक अधिकार प्रदान कर देते थे॥

एक और साधन जिस ने इन को हिन्दोस्तान में सफलता प्राप्त कराई वह।

बराबरी के अधिकार

हैं, ईसाइयों में यह नियम ठीक नहीं, वह किसी को बराबर का दर्जा (पद) देने को तैय्यार नहीं। बौद्ध भी किसी को अपने जैसा मानने पर तैयार नहीं, और हिन्दुओं में इस विचार का चिन्ह नाम मात्र भी नहीं। परन्तु मुसलमानों में यह नियम सब से प्रथम है। वह झट ही बराबरी का दर्जा दे देते हैं॥

खलीफा उमर के विषय में प्रसिद्ध है कि जब वह दमश्क में विजय के अनन्तर प्रवेश हुए तो वह ऊंट की नकेल पकड़े हुए आगे २ जा रहे थे और उन का नौकर ऊंट पर सवार था, रास्ते में यह दोनों आ रहे थे खलीफा ने नौकर को कहा कि एक पड़ाव तुम चलो और एक पड़ाव मैं चलता हूं यद्यपि नौकर ने नाहीं की परन्तु खलीफा ने कहा कि (सहधर्मी) मुसलमान होने के कारण जैसा मैं हूं वैसे तुम हो और क्योंकि हम धार्मिक काम कर के आ रहे हैं, इस लिये दोनों एक जैसे ही अधिकारी हैं ॥

भारत वर्ष पर एक दृष्टि

इसी प्रकार आप इस धार्मिक एकता को देखते हुए भारत वर्ष पर दृष्टि डालें तो आप को प्रतीत होगा कि बराबरी के अधिकार ने इन को कितना उच्च और उन्नति के शिखर पर पहुंचाया है।

बंगाल और पंजाब में इन की इतनी प्रबलता है और क्या कारण है कि दिल्ली में मुसलमानों का इतनी देर राज रहा परन्तु वहां वह प्रबलता नहीं जो बङ्गाल और पञ्जाब में है। दिल्ली में छय सौ वर्ष तक इन का राज रहा संयुक्त प्रान्त को और देहली की मनुष्य संख्या को देखें आठ आदमियों में सात हिन्दू हैं।

अर्थात् दिल्ली के आस पास ७/८ भाग हिन्दुओं का है जहां मुसलमान बादशाह रहते थे।

इस का कारण यह है कि मुसलमान बादशाहों ने मेवात

के लोगों और बरार और दिल्ली के बीच के देश को विजय करने के लिये सेना का एक बड़ा भारी चक्कर डाल दिया था और वहां पर "कतल आम" की आज्ञा दे रखी थी। उस ने लाखों मनुष्यों को नष्ट कर दिया। परन्तु इतनी कड़ाई पर $\frac{७}{८}$ वां भाग हिन्दू और $\frac{१}{८}$ भाग मुसलमान हैं। परन्तु पूर्वी बङ्गाल में १०० में ८० मुसलमान और २० हिन्दू हैं। रावी के पश्चिमी ओर देखें तो मुसलमान अधिक मिलेंगे और इस ओर कम, पश्चिमी ओर जेहलम के अन्तरगत सौ में ९० मुसलमान और १० हिन्दू हैं और रावल पिंडी और पिशावर की ओर तो इन की बहुत ही अधिकता है। इस का क्या कारण है कि देश के दोनों ओर तो इन की अधिकता है पर बीच में नहीं। पञ्जाब के लिये तो यह कारण है कि यह हिन्दोस्तान का द्वार है यहीं से वह आते थे, यह पंजाबियों ही की छाती थी कि वह हर भांति के अन्याय, उपद्रव और आक्रमण सहते थे। परन्तु अन्त में इनका हिन्दू रहना कठिन हो गया था। इस प्रकार पूर्व की ओर जाते हुए वह देश को अपनाते जाते थे। बङ्गाल में ऐसी तलवार नहीं चली जैसी पंजाब में चली है।

पूर्वी बङ्गाल में जो लोग रहते थे उन के लिये आवश्यक था कि वह मुसलमान हो जायें। वहां पर सौ में केवल २० ही ऊंची जाति के लोग थे और शेष नीच जाति वाले रहते थे। जब मुसलमान वहां गये और उन्हों ने देखा कि हिन्दू उन से बुरा बर्ताव करते हैं तो उन्हों ने उन को अपनी ओर खैंचा। उन्हें सामाजिक अधिकार के साथ २ बराबरी का दर्जा भी दिया। और फिर कोई भेद न रहा कि यह पुराना और यह

नया मुसलमान है इसलिये वहां मुसलमानी धर्म ने अधिक उन्नति की। और आज कल भी यही देखा जाता है कि ईसाइयों का ज़ोर वहां है जहां अछूत जातियें अधिक हैं। मद्रास ट्रावनकोर में क्योंकि यह अधिक हैं इस लिये आबादी का पांचवां भाग ईसाई है। मद्रास में सौ में से पांच ईसाई और पांच मुसलमान हैं इस का कारण यह है कि वहां जाति में अधिक शिथिलता नहीं। बङ्गाल में अछूत जाति वालों पर असर (प्रभाव) पड़ा और वह मुसलमान होगये। सहस्रों ही नहीं बल्कि लक्षोंने यह मत ग्रहण कर लिया। धार्मिक उत्साह इन में अधिकता से संचार किया गया, चाहे कोई काज़ी हो या मौलवी, परन्तु दूसरे को अपने में प्रवेश करना अपना कर्तव्य समझता था। और यही कारण था जिस ने इन को दृढ़ बना दिया। वह ईश्वर पर भरोसा रखते थे और उसका नाम लेकर निकल खड़े होते थे यद्यपि बाद में तलवार को त्यागना पड़ा परन्तु ईश्वर पर विश्वास वैसा ही था और इसी विश्वास से बन्धे हुए वह उत्साह से काम करते रहे॥

—:※:—

तीसरे लैक्चर का उत्तरार्द्ध।

वैदिक धर्म कैसे फैल सकता है।

सब से उत्तम और आवश्यक अंग प्रचार के लिये जिसे मैं समझता हूं वह धर्म का अङ्ग है। हर एक मैम्बर जो आर्य्य समाज में आवे उसे धर्म की चिन्ता हो, और उसे इस बात की लगन हो कि उस ने धर्म पर दृढ़ रहना है। धर्म परायण होना मानो अपने आप को एक उपदेष्टा के रूप में प्रगट करना है।

सोसायटी (समाज) का सब से पहिला काम हर एक मैम्बर में धर्म का भाव उत्पन्न करना है, जब एक मेम्बर देखे कि अब धर्म का भाव मन में पूर्ण रीति से स्थान पाचुका है तो फिर उस के साधन को बर्ते। मैं देखता हूं कि आज २५ वर्ष के बाद भी एक मेम्बर धर्म में वैसा दृढ़ नहीं,जैसा होना चाहिये था वह बलवान क्यों नहीं है,इस मे मेरा कभी भी यह अभिप्राय नहीं, कि इस में धर्म का भाव नहीं प्रत्युत इस से मेरा यह अभिप्राय है कि उस में वैसा धर्म भाव नहीं है जैसा कि चाहिये।

पहिली न्यूनता

जो इस का कारण है वह यह है कि एक आदमी यह भाव लेकर आर्य्य समाज में प्रवेश करता है कि मैं दूसरों का उपकार करूंगा, चन्दा दूंगा, कालिज के लिये काम करूंगा, प्रचार फण्ड के लिये धन एकत्र करूंगा, और किसी अधिकारी का कार्य्य सम्भालूंगा और मन्त्री या प्रधान बनूंगा।

यह भाव उस में वर्तमान होते हैं वह समझता है कि मैं दूसरों के लिये काम करता हूं। यह भाव बहुत अच्छे और पवित्र हैं यदि आर्य्य समाज इन में परोपकार का भाव उत्पन्न कर देता है,तो यह बहुत अच्छा है और उन्नत करने वाला है, परन्तु जब एक पुरुष मैम्बर बनता है और वह दूसरे भावों को लेकर आवे अर्थात् मैं धार्मिक जीवन को उच्च बनाऊंगा, वेदों से प्रेम और उन का अध्ययन करूंगा, ईश्वर से जीता जागता सम्बन्ध जोड़ूंगा यदि इस भाव को लेकर वह आर्य्य समाज में आवे तो अति उत्तम होगा वह यह विचारे कि मुझे यहां आकर संध्या सीखनी है, हिन्दी व संस्कृत पढ़ना है,योगाभ्यास की ओर रुचि

बढ़ानी और उसे सीखना है और अपने जीवन को पवित्र बनाना है, और यह भाव अत्यन्त लाभ दायक होंगे, इस का स्वाभाविक फल यह होगा कि वह आर्य्य समाज में आकर ऐसे लोगों को ढूंढ़ेगा जिन से वह अपना काम बना सके। कारण क्या है कि मैम्बर २५–२५ वर्ष से मौजूद हैं परन्तु उन्हें संस्कृत नहीं आती, इतनी देर से मैम्बर हुए २ भी उन में वह जीवन नहीं जो आवश्यक था। कारण इस का यह है कि लोग यह भाव लेकर नहीं आते वह केवल चन्दा देने आते हैं। स्मरण रहे कि जो जैसी भावना करता है वही उस को फल मिलता है। यदि आप आर्य्य समाज में अपने जीवन के सुधार की भावना लेकर आए हैं तो वही फल आप को मिलेगा। मैंने कहा कि परोपकार का भाव अच्छा है, परन्तु दूसरे भाव इस से कई गुणा श्रेष्ठ हैं उपकार के भाव ठहर नहीं सकते यदि ईश्वरीय भाव न रहें! एक बृक्ष का हरा भरा रहना और उस में से फल और फूलों का निकलना तब ही तक हो सकता है, जब तक कि उस की जड़ें हरी हैं और उन को बराबर पानी मिल रहा है, नहीं तो वह सूख जायगा और फिर न फल ही होंगे और न फूल होंगे। इस प्रकार जब तक परमात्मा पर विश्वास रहेगा, तब तक परोपकार का बृक्ष हरा भरा रहेगा, नहीं तो सूख जायगा। यदि आप इस बृक्ष को ईश्वर प्रेम के जल से सिञ्चन नहीं करते तो इस का हरा रहना असम्भव है। जहां मेम्बरों में ईश्वरीय प्रेम और इस भावना की न्यूनता है वहीं प्रबन्ध में न्यूनता आ जाती है॥

आर्य्यसमाज के लिये सब से पहिला काम

यह है कि वह मैम्बरों को धर्म के भावों में लिप्त कर दे।

आप देखें कि जब किसी स्थान पर समाज स्थापित होता है, वहां कथा भी एक मनुष्य कर देता है, कुछ लोग एकत्र भी हो जाते हैं, परन्तु ज्यों ही समाज स्थापित करने वाला वहां से बदला, फिर आर्य्य समाज नष्ट हो जाता है। इस का कारण क्या है? कई ऐसे स्थान हैं जहां ऐसे दृश्य दिखाई देते हैं, बहुत से स्थानों पर गाड़ियें वर्तमान होती हैं परन्तु वह स्वयं चल नहीं सकतीं, उन्हें चलाने के लिये इञ्जन की आवश्यक्ता है।

कई आदमी गाड़ियों की भांति होते हैं वह स्वयं नहीं चल सकते, प्रत्युत उन को पुरुष रूपी इञ्जन की आवश्यक्ता होती है। ऐसे लोगों के लिये विद्वान् पंडितों की आवश्यक्ता है। जो कथा करें प्रेम से लोगों के संशय निवृत करें। पंडितों का आचरण आदर्शनीय हो। ऐसे मनुष्य इन गाड़ियों को चला सकते हैं, फिर यह बात सुनने में नहीं आ सकती कि अमुक स्थान पर आर्य्य समाज टूट गया। यह काम आर्य्य समाज का पहिला काम है कि वह अपने मैम्बरों में धर्म भाव को कूट २ कर भर दे, इस ओर से हम शिथिल हैं, यद्यपि बिलकुल शिथिल नहीं क्योंकि धार्मिक मनुष्य विद्यमान हैं। ऐसे पुरुष भी बराबर हैं जो धर्म परायण हो चुके हैं। परन्तु फिर भी इस ओर से हम शिथिल हैं। आर्य्य समाज के प्रत्येक बच्चे में यह भाव घुस जाना चाहिये कि आर्य्य धर्म श्रेष्ठ धर्म्म है उसे इस बात के कहने में गौरव हो, कि मुझे यह धर्म्म–विरसे में मिला है, मेरी यह सम्पदा है मेरा यह धन है, मेरा यह जीवन और मेरा यह आत्मा है। जब यह भाव बलवान् और सुदृढ़ होगा तब समझा जावेगा कि आर्य्य समाज सुदृढ़ हो गया है।

दूसरा काम

यह आर्य समाज का नियम भी है कि अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये, प्रत्युत दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। हमारा दूसरा काम यह है कि हम अपने विचारों को जिनसे हमने लाभ प्राप्त किया है, जिन भावों से हमारा जीवन पवित्र बन गया है, उनको दूसरों पर प्रगट करें। यदि दफ़तर में हों तो वहां अपने साथ के बाबुओं को, यदि पाठशाला में हों तो अपने सहपाठियों को, यदि कहीं और स्थान में हों तो वहीं अपने भाव उनको दें, तात्पर्य यह है कि आर्यों का जीवन ऐसा हो कि जहां कहीं कोई आर्य्य जावे। वह वहां सन्ध्या और आर्य्य समाज की वार्ता करे। यदि ऐसा जीवन होगा तो वह भाव सब से प्रथम होगा जो प्रचार के लिये आवश्यक है॥

मुहम्मद का प्यारा

मैंने अपने व्याख्यान में बतलाया था कि मुहम्मद साहिब ने सब से पहिले अपनी स्त्री " ख़दीजा " को उपदेश दिया था जिस ने फिर स्त्रियों में प्रचार किया। एक दिन आयशा ने (जो इनकी दूसरी स्त्री थी) मुहम्मद साहिब से पूछा कि आप सब से अधिक और प्यारी स्त्री किसे समझते हैं। यद्यपि मुहम्मद साहिब आयशा से दबते थे तो भी वह न बोले, और उन की आंखों में आंसू आगये, और अन्त को उत्तर दिया कि मैं ख़दीजा को सब से अधिक प्यार करता हूं, क्योंकि सब से पहले वही मेरी सहधर्मिणी बनी थी, जब मैं एक साधारण मनुष्य था और

जब मैं अति क्षुद्र सा व्यापारी था और उस समय मैंने पैग़म्बरी का दाबा किया था तो भी वह मेरी सहधर्मिणी बनी, इस लिये मैं उसे ही अधिक प्रेम करता हूं (और वास्तव में बात भी ठीक है) उन का यह विचार था कि जो मुझ पर विश्वास करे (मेरा सहधर्मी बने) वही मुझ को प्यारा है, और जो उन के धर्म की बात दूसरे को कहे वही इन के लिये स्नेह के योग्य है। मुझे एक दिन देहली जाना पड़ा, मैंने वहां मसजिद में देखा कि एक मुसलमान के सामने दो हिन्दू बैठे हैं और मुसलमान उन को उपदेश दे रहा है। इस नियम ने उन के मन में किस दृढ़ता से स्थान पा लिया है कि जब कोई समय मिल जावे तो झट अपना भाव दूसरे पर प्रगट करें यह भाव सब से अधिक मुसलमानों में विद्यमान है आज कल इसी कारण से मिशनरी सोसायटी (ईसाई धर्म प्रकारक मण्डली) में पुकार हो रही है।

दक्षिणी अफ़रीका में आदि (मूल) निवासी ईसाई हैं परन्तु उत्तरी अफ़रीका किस के हाथ में होगा आज कल इस के विषय में बड़ी पुकार मची हुई है। एक पादरी ने कह दिया है कि यह भाग मुसलमान हो जायगा, हालां के मुसलमानों की नियमानुसार कोई संस्था नहीं है, और ईसाइयों की नियमानुसार संस्थायें और प्रचारक हैं। तो भी यह सोचा जा रहा है कि वह भाग शीघ्र मुसलमान होजायगा। कारण यह है कि जो मुसलमान व्यापारी वहां जाते हैं वह आप ही आप उपदेशक बन जाते हैं। वह अपने आचरणों से लोगों के मनों को आकर्षित करते हैं इस भाव ने ईसाई धर्म प्रचारकों को डरा

दिया है, अब आप अपने में देखें कि यह भाव कितना है हिन्दुओं में इस भाव के न होने से ही अवनति हुई है, जहां इस भाव का अभाव होगा वहीं अवनति होगी।

तीसरा काम

जिस को आर्य्य समाज ने करना है वह अपने मैम्बरों में भक्तिभाव को बढ़ाना है।

स्मरण रहे कि तीन प्रकार की शक्तियें मनुष्य को उच्च बना देती हैं विद्या, भक्ति और तपस्या। विद्या में कितनी शक्ति है, उपनिषद में आया है कि यदि एक ओर सहस्रों मूर्खों की मण्डली हो और दूसरी ओर एक विद्वान् वेद को जानने वाला हो तो उस एक की बात को अधिक प्रमाणित समझा जावेगा। फिर जिसमें यह तीन गुण हों वह अवश्य सफलता प्राप्त करेगा। जो भक्त और तपस्वी भी हों उन के सन्मुख कोई नहीं खड़ा हो सक्ता, गुरु नानक ने तपस्या की, यद्यपि वह उच्च श्रेणी की न थी, विद्या भी वह कुछ बहुत नहीं जानते थे, परन्तु भक्ति का भाव उन में उच्च श्रेणी का था, इस से देखें कि उन्हों ने किस प्रकार लोगों के हृदयों में घर कर लिया। कबीर जी भी विद्वान् न थे परन्तु भक्ति ने उन को कितना उच्च बना दिया। आप कई ऐसों को देखेंगे जिन में भक्ति नहीं प्रत्युत तपस्या है, वह भी सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

और जहां यह तीनों इकट्ठी हों वहां फिर देखें क्या२ परिवर्तन होता है, एक बड़ी भारी शक्ति उत्पन्न हो जाती है। बुद्धदेव, ईसा मसीह और मुहम्मद साहिब को देखें, बुद्धदेव ने तपस्या की,

ईसामसीह ने भक्ति की,मुहम्मद साहिब ने तपस्या की। यह तीनों विद्वान् न थे,इनमें से किसी में भक्ति और किसी में तपस्या थी। परन्तु वह कृतकार्य्य होगये जिम में जिस श्रेणी तक कोई वस्तु विद्यमान है। वह वहीं तक कृतकार्य्य होजाता है जिस समाज में तीनों शक्तियें विद्यमान हैं वह बलवान और प्रबल है।

यह तीनों साधन बहुत महान हैं परन्तु यह तब ही फलीभूत हो सकते हैं जब आदमी इन को अपने ऊपर घटायें, ईसाई पहिले कन्दराओं में चले जाते थे और तपस्या करते थे, सहस्रों पर केवल इसी बात ने प्रभाव डाला।

बाबा फरीद आदि बिलकुल निरक्षर थे परन्तु तपस्या का भाव इन में बड़े वेग से विद्यमान था। इस बात ने सहस्रों को बदल दिया। अब ज़रा आर्य्य समाज को देखें, इसे कोई ऐसी वैसी सभा नहीं कह सकते, यह एक सर्व गुण सम्पन्न समाज है, इस की नींव पूर्ण है, इस की बनावट पूर्ण है। चाहिये यह था कि इस में सन्यासी हों,वानप्रस्थी हों, जो आदर्श बन कर दिखलावें, जिन के जीवनों में नम्रता हो, ईश्वर प्रेम इन के जीवनों में समाया हुआ हो, जहां वह लोगों के जीवनों में कमी देखें वहीं उन के पूरा करने में लग जावें। हमारे पास तो सत्य है परन्तु जिन के पास सत्य नहीं और उन के पास आदमी हैं तो भी वह बढ़ जाते हैं, कारण यह है कि उन के आदमी भक्ति भाव को लेकर काम करते हैं, भक्ति उन का प्रथम साधन होता है। हमें चाहिये कि हम भक्ति से बढ़ कर:—

उन्मत हो जावें

मुझे क्षमा करें यदि मैं यह कहूं कि भक्ति की लहर हम

को आनन्द मय बनाती हुई उन्मत्त बना दे। इस का फल यह होगा कि हमारी यह उन्मतत्ता हमारे जीवनों को सुधार कर हमें आगे बढ़ने और दूसरों को सुधारने का उत्साह दिलावेगी। कदाचित् आप इन बातों पर हंसे, परन्तु मैं कहूंगा कि हम में भक्ति की ऐसी लहर उत्पन्न होजावे जो हमें उन्मत्त बना दे, हम अपनी धुन में लगे हुए लोगों को उन्मत्त प्रतीत हों, हमारा हृदय आनन्द के समुद्र में स्नान करता हुआ आनन्द-मय बन जावे। चेतन देव यदि आज कल विद्यमान होता तो लोग उसे उन्मत्त कहते, डाक्टर उसे नीम पागल के नाम से पुकारते, परन्तु उस ने कितना बड़ा काम किया है। यूरूप में बुरून ने एक सभा बनाई, पता लगायें, कि इस की क्या दशा थी, यह केवल पतलून पहिनता था और जहां कोई बड़ा पत्थर देखता था,वहां खड़ा होकर प्रचार आरंभ कर देता था, यदि वह आज होता तो लोग उसे उन्मत्त पुकारते। इन्हीं का क्या कहना यदि ईसामसीह (जिनका खान पान और वस्त्रादि ऐसे ही विचित्र थे)आज कल होते तो सौ में ९९ आदमी उन को अपने ही घर में न प्रवेश होने देते। परन्तु वह क्या थे वह एक प्रकाश थे। वह उन्मत्त बन गये और उन में एक ऐसी आकर्षण शक्ति आगई जिस ने लोगों को इन की ओर खैंचा। उन्मत्त लोग अपने शत्रुओं में से द्वेश भी दूर कर देते हैं। और प्राण घातक शत्रुओं के हृदय से भी शत्रुता नष्ट हो जाती है ज़रा देखें तो सही यह भक्ति की उन्मत्तता का दृश्य है। अब तनिक तपस्या की ओर आवें, आज कल कई मूर्ख तपस्वी आप को दिखाई देंगे। यदि आप के नगर में एक मूर्ख तपस्वी आता है तो सहस्त्रों उस

के दर्शनों को जाते हैं, आदर्श वाले पुरुषों की आवश्यकता है। यदि आप में सन्यासी और वानप्रस्थी हों और वह तपस्या करने वाले हों, विद्वान हों, उन की भक्ति उन्मतत्ता तक पहुंच गई हो तो वह लोग प्रभाव डाल सकते हैं। यह एक और साधन है जो धर्म प्रचार के लिये है। क्या आप ऐसे आदमी नहीं निकाल सकते जो प्रतिज्ञा करें कि वह जीवन पर्य्यन्त तपस्या करेंगे, या भक्ति में मन को लगा कर प्रचार का काम करेंगे। यदि वह यह नहीं कर सकते कि जीवन पर्य्यन्त काम करें तो कुछ समय के लिये ही साहस करें। और ऐसे आदमी उत्पन्न हो सकते हैं केवल थोड़े से पुरुषार्थ की आवश्यक्ता है॥

लोगों के काम आओ

चौथी बात जो मैं बतलाना चाहता हूं और जो धर्म प्रचार के साधनों में से एक आवश्यक साधन है वह यह है कि आप लोगों के काम आवें।

दूसरे धर्म वाले केवल इसी एक बात से कितने बढ़ गये हैं। जब अकाल पड़ता है तो दूसरे किस प्रकार बच्चों के पीछे पड़ते हैं। एक पिता उस समय अपनी जान के लिये बच्चों को बेच डालता है। आप उस के काम आवें उस के बच्चों को बचावें और उसे बचावें। एक विधवा है उसे अपने विवाह की धुन है वह केवल इसी लिये ईसाइयों की शरण लेती है आप उसके काम आवें और उसके धर्म को बचावें।

एक बीमार है उसे दवाई (औषधि की आवश्यक्ता है,

दवाई से प्यारा यद्यपि धर्म्म होना चाहिये, परन्तु वह अपनी शिथिलता के कारण दूसरों की शरण में जाता है, आप उस को दवाई देकर उसके आत्मिक और शारीरिक जीवन को बचावें। शिक्षा धर्म से निचली श्रेणी पर है परन्तु लोगों की अज्ञानता उन्हें मिशन स्कूलों में ले जाती है। आप प्रयत्न करें और उनके लिये विद्या का भण्डार खोलदें, और उनको पतित होने से बचावें। आर्य्य समाज यह काम बराबर करता चला आ रहा है, आवश्यक यह है कि आर्य्य समाज लोगों के काम आवे, जैसा कि दूसरे लोग समय देखकर काम में लग जाते हैं। जहां हम देखें कि लोगों को हमारी आवश्यक्ता है, जहां हम देखें कि कोई अपनी शिथिलता के कारण अपने आत्मिक जीवन को घायल करने लगा है, वहां पहुंच कर उसे थाम लें। मैंने संक्षेपतः चार बातें आपके आगे प्रगट की हैं, धर्म प्रचार के केवल यही साधन नहीं, प्रत्युत और भी हैं, आज मैंने केवल चार बातों की ओर आप को ध्यान दिलाया है, आप इन साधनों को अपने जीवन में घटायें और इनको बर्तें, धर्म की अग्नि आप में बड़े तेज से प्रचण्ड हो, भक्ति आप में इतनी बढ़े कि असीम होजाय आप में ऐसे २ विद्वान् हों कि जिस से आप को यह कहने का गौरव हो कि वेदों के वक्ता और उपनिषदों के विद्वान् यदि कहीं हैं तो आर्य्यसमाज में विद्यमान हैं। सब से उत्तम पंडित यदि कहीं पाये जाते हैं तो वह आर्य्यसमाज में, पदार्थ विद्या के विद्वान यदि पाओगे तो आर्य्य समाज में ही पाओगे, इतिहासज्ञ, दार्शनिक और विज्ञान के जानने वाले यदि मिलसकते हैं तो आर्य्यसमाज में। इसके

साथ ही भक्त उत्पन्न हों जो भक्ति से लोगों को खैंचें, तपस्वी हों जिनकी तपस्या देखकर लोग चकित हो जावें। यह साधन हैं जिनसे आर्य्यसमाज उन्नत हो सकता है और यही विधि है जिससे वेदों का उपदेश जगत् भर में फैल सकता है।

स्वामी दयानन्द जी महाराज ने हम पर यही कर्तव्य लगाया है कि हम वेदोक्त धर्म्म को कोने२ तक पहुंचावें, आर्य्य भाइयो! अपने कर्तव्य की ओर ध्यान देकर इन साधनों का वर्तो और अपने कर्तव्य से उऋणी होओ॥



नागरी पुस्तक

जो आर्य्य समाज अनारकली लाहौर से मिलते हैं—

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज कृत पुस्तक

संख्या	नाम			मूल्य
१	चारों वेद मूल (जिल्द वाले)		...	५)
	वेदों की अनुक्रमणिका		...	१॥)
२	ऋग्वेद भाष्य (१० भाग)		...	१८)
३	यजुर्वेद भाष्य (४ भाग)		...	८)
	,, भाषा भाष्य	...	...	२।)
४	ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	...	...	१।-)॥
५	वेदाङ्ग प्रकाश १४ भाग	...	...	४।≶)॥
६	अष्टाध्यायी मूल	...	...	≶)॥
७	पञ्चमहा यज्ञ विधि	...	...	-)।
८	,, ,, बढ़िया	...	...	≠)
९	निरुक्त ...	...	...	॥≠)
१०	संस्कृत वाक्य प्रबोध	...	...	≶)
११	व्यवहार भानु	...	...	≶)
१२	भ्रमोच्छेदन	...	...	)॥।
१३	अनुभ्रमोच्छेदन	...	...	)॥।
१४	सत्यधर्म विचार (मेला चांदापुर)		...	-)
	आर्य्योद्देश्य रत्नमाला	...	...	)।
१६	गोकरुणा निधि	...	...	-)
१७	हवन मंत्र	~	...	)।
१८	आर्य्याभिविनय बड़े अक्षरों का		...	।≠)॥
१९	,, ,, ,, गुटका		...	≠)॥
२०	सत्यार्थ प्रकाश	...	...	॥≶)॥
२१	संस्कार विधि	...	...	।≶)
२२	विवाह पद्धति	...	...	≶)
२३	शास्त्रार्थ फ़ीरोजाबाद	...,	...	-)॥

पं० आर्य्यमुनि जी कृत पुस्तक ।

संख्या	नाम	मूल्य
२४	गीता आर्य्य भाष्य	१।।।=)
२५	भीष्मपितामह का जीवन चरित्र ...	।=)

पं० राजारामजी कृत पुस्तक ।

संख्या	नाम	मूल्य
२६	उपदेश सप्तक	।/)
२७	प्रार्थना पुस्तक	/)।
२८	शंकर जीवन	।=)
२९	योगदर्शन	।।।)
३०	उपनिषदों की भूमिका	)।।
३१	ईश उपनिषद्	=)
३२	केन उपनिषद्	=)
३३	कठउपनिषद्	।=)
३४	प्रश्न उपनिषद्...	)
३५	मुण्डक उपनिषद् माण्डूक्य उपनिषद ...	।/)
३६	तैत्तिरीय उपनिषद्	।=)
३७	ऐतरेय उपनिषद्	=)
३८	छान्दोग्य उपनिषद्	२)
३९	बृहदारण्यक उपनिषद्	२=)
४०	श्वेताश्वतर ,, ...	।)।।
४१	ग्यारह इकट्ठी उपनिषदें	५।।=)
४२	पहली आठ	१।।=)
४३	ओंकार की उपासना	)।।।
४४	वाल्मीकि रामायण पूरा	५।)

साधारण धर्म्म सम्बन्धी पुस्तकें ।

संख्या	नाम	मूल्य
१	धर्म्म शिक्षक	।=)
१	संक्षिप्त मनुस्मृति (म० हंसराज जी द्वारा सङ्कलित) भाषा टीका	।।)

संख्या	नाम	मूल्य
४७	शुद्धि पं० रामचन्द्र शास्त्री...	=)॥
४८	मनुस्मृति पं० तुलसीराम...	।॥)॥
४९	वीर्य्य रक्षा ...	/)॥
५०	गर्भाधान विधि ...	=)
५१	नारी भूषण ...	।/)
५२	नारी धर्म्म विचार ...	॥)
५३	क्षात्र धर्म्म ...	॥)
५४	सीताजी का जीवन चरित्र ...	।॥)
५५	व्याख्यान माला ...	।=)
५६	भारतवर्ष का इतिहास ...	१।)
५७	स्त्री सुबोधिनी ...	१।)

भजन पुस्तक ।

संख्या	नाम	मूल्य
५८	सङ्गीत रत्न प्रकाश, १—५ भाग ...	।॥)
५९	ज्ञान भजनावली ...	॥)
६०	स्त्री भजन भण्डार ...	।=)
६१	स्त्री ज्ञान प्रकाश ...	=)॥
६२	शान्ति सरोवर ...	/)
६३	आर्य्य गायन ...	।=)
६४	गंजीना भजन ...	।=)
६५	संग्रह गुलजार भजन ...	=)
६६	संङ्गीत पुष्पावली ...	॥)
६७	स्त्री भजन ...	/)

स्त्री शिक्षा की पुस्तकें ।

संख्या	नाम	मूल्य
६८	नारी धर्म्म विचार २ य भाग ...	१॥)
६९	सीता चरित्र ४ भाग ...	१।/)
७०	नारायनी शिक्षा ...	१=)

संख्या	नाम	मूल्य
७१	भारत की वीर विदुषी स्त्रियां	॥=)
७२	सीता जी का जीवन	॥=)
७३	गृहिणी	॥=)
७४	स्त्री हितोपदेश	।=)
७५	स्त्री आरोग्यता	।=)
७६	भारत की सच्ची देवियां	।=)
७७	सीता चरित्र नाटक	।)
७८	चन्द्रकला	।)
७९	लक्ष्मी	=)
८०	युवा रक्षक	≡)
८१	गृह शिक्षा	=)

पं०सन्तरामजी वेदरत्न कृत पुस्तकें।

संख्या	नाम	मूल्य
८२	शुद्ध रामायण १-५भाग... ...	१।)
८३	नमस्ते प्रकाश	/)
८४	नवग्रह समीक्षा	/)
८५	श्राद्ध मीमांसा	/)
८६	पांच से कम नहीं	)॥
८७	स्वा० द० का हिन्दु जाति पर उपकार ...	)॥
८८	श्राद्ध विचार	)।
८९	संस्कार क्या हैं	=)
९०	धर्म्म प्रचार के साधन	=)
९१	स्वामी जी का जीवनचरित्र ...	१≡)

॥ ओ३म् ॥

✻ आर्य्य समाज के नियम ✻

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।

४—सत्य ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।
